मेरी खेती

Page No. 1-24 /May 2022

- खेत खलियान
- पशुपालन-पशुचारा
- मशीनरी
- फूल
- सब्जी
- मासिक कृषि कार्य
- मिट्टी की जांच

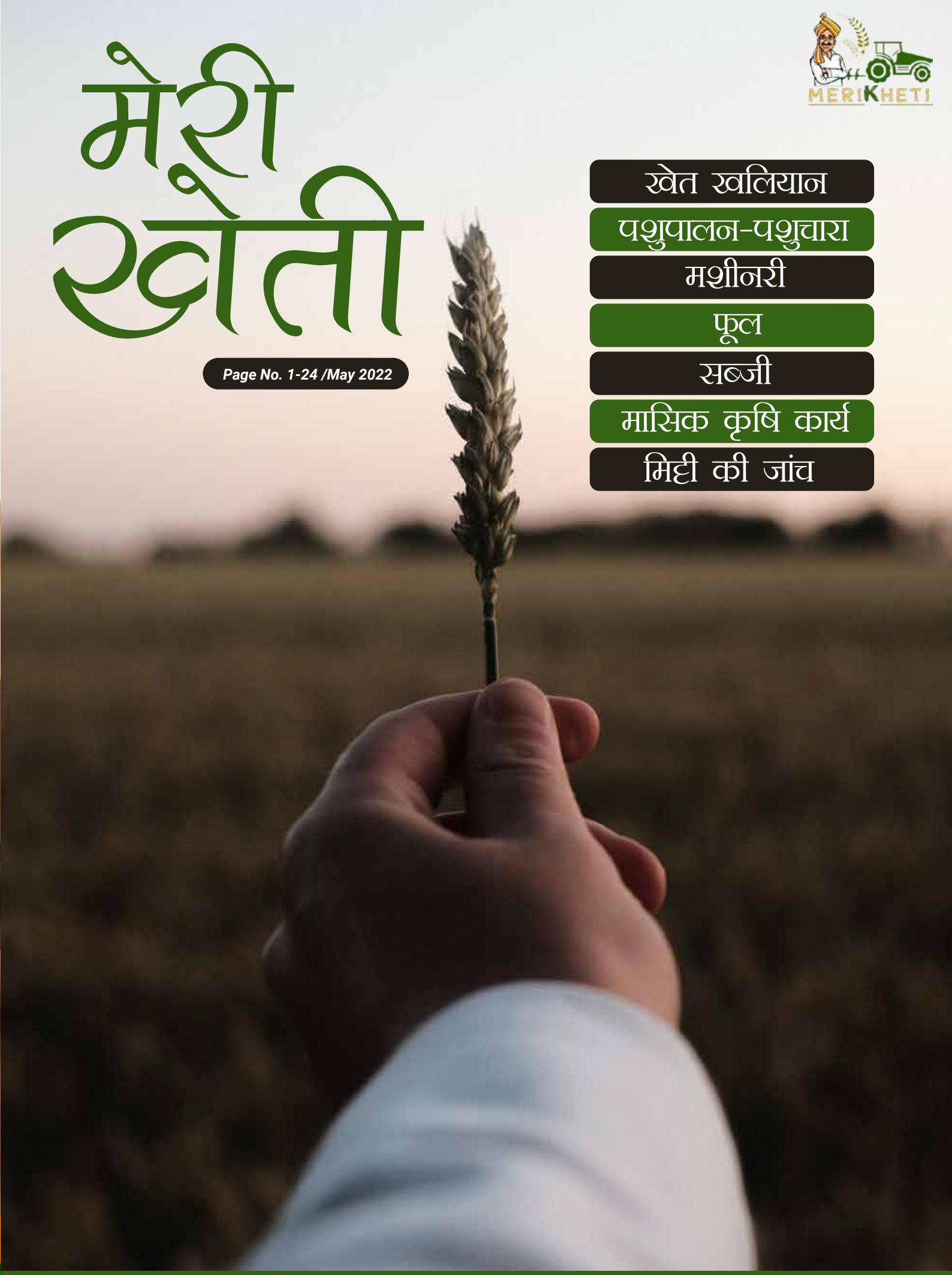

+91 766 8256 275 | www.merikheti.com | krishan@merikheti.com

संपादकीय

कहीं खादों की किल्लत ना हो जाए

आगामी खरीफ सीजन में उर्वरकों की खपत रबी सीजन से भले ही कम रहे लेकिन विश्व बाजार में उर्वरकों की बढ़ती कीमतों के चलते सरकार को उर्वरक भंडार बनाए रखने की चुनौती का सामना करना पड़ रहा है। इसके अलावा सरकार को किसानों को खाद पर दी जाने वाली छूट के नाम पर करीब 55 फीसदी यानी ढाई लाख करोड़ का अतिरिक्त भार उठाना पड़ेगा।

देश में किसानों को खाद की किल्लत से बचाने के लिए प्री प्रोजीशनिंग सिस्टम बनाया। इसके तहत आगामी फसलों की मांग के अनुरूप खादों का भंडारण किया जाता है। बीते रबी सीजन को छोड़ दें तो देश में यूरिया, डीएपी जैसे खादों की कोई किल्लत नहीं रही। कोरोनाकाल के चलते विदेशों के खादों के पर्याप्त आयात में हुई दिक्कतों का सामना देश के किसानों को भी करना पड़ा। आगामी सीजन की जरूरत के अनुरूप सरकार ने खादों का भंडार किया है लेनिक खरीफ के बाद रबी सीजन के लिए भी स्टाक बनाए रखना देश की जरूरत है।

विदित हो कि सरकार कृषि कानूनों की वापसी के बाद से खेती किसानी से जुड़े विषयों को पूरी गंभीरता से ले रही है। गुजरे रबी सीजन में खादों की किल्लत से जूझे किसानों को शायद आगे इस तरह की दिक्कत न रहे। सरकार का यही प्रयास है। खरीफ सीजन में रबी से करीब 15 प्रतिशत खादों की कम जरूरत होती है। खाद की मांग मानसून की बरसातों पर भी निर्भर करती है। यादि मानसून लेट होता है तो कई कम पानी वाले इलाकों में किसान धान की बजाय दूसरी फसलें लगा लेते हैं। इनमें खाद की कम जरूरत पड़ती है।

किसानों को भारत में मिलने वाली छूट के कारण यहां खादों के दाम ब्राजील, अमेरिका, चीन सरीखे देशों से काफी कम हैं। सरकार ने देश में खादों की कीमतें नियंत्रित रखने की दिशा में कमद बढ़ाते हुए करीब 61 हजार करोड़ की सब्सिडी को मंजूरी दी है। कोरोना काल में खादों का उत्पादन, आयात, निर्यात में रुकावटों के चलते कमी बनी रही।

इधर रूस-यूक्रेन युद्ध और ईरान तथा रूस पर अंतरराष्ट्रीय पाबंदियों की वजह से अंतरराष्ट्रीय स्तर पर उर्वरक के दाम तेजी से बढ़े हैं। वहीं माल-भाड़ा भी चार गुना बढ़ गया है। यूरिया के दाम भी अप्रैल 2022 में 930 डॉलर प्रति टन पर पहुंच गए जो एक साल पहले 380 डॉलर प्रति टन थे। इसी तरह डीएपी की कीमतें भी 555 डॉलर प्रति टन से बढ़कर 924 डॉलर प्रति टन हो गई।

दिलीप यादव
मेरी खेती

सलाहकार मंडल

श्री छेदालाल पाठक
(संरक्षक मार्गदर्शक)

डॉ. एमसी शर्मा,
सेवानिवृत्त निदेशक एवं
कुलपति आईवीआरआई इज्जतनगर

प्रो. ए पी. सिंह
पूर्व कुलपति वेटरनरी
विश्वविद्यालय मथुरा

डॉ.एस.के.गर्ग
कुलपति राजस्थान यूनिवर्सिटी ऑफ
वेटरनरी एंड एनिमल साइंस

डॉ.ओमवीर सिंह
निदेशक बीज प्रमाणीकरण
(सेवानिवृत्त) उत्तर प्रदेश

डॉ. उदय भान सिंह
डीन कृषि महाविद्यालय कुम्हेर
भरतपुर राजस्थान

श्री सुधीर अग्रवाल
(प्रगतिशील किसान)

दिलीप यादव
(विशेषज्ञ,मेरीखेती)

तेजपाल सिंह
(प्रगतिशील किसान)

कृष्ण पाठक
(विशेषज्ञ,मेरीखेती)

टमाटर की फसल में एकीकृत कीट प्रबंधन

टमाटर उत्पादन किसानों के लिए बहुत ही लाभदायक व्यवसाय है। जहां जलवायु की विविधता के कारण विभिन्न प्रकार की सब्जियों की खेती सफलतापूर्वक की जा रही है। सब्जियों पर कीटों का प्रकोप अधिक होता है। इससे पैदावार में कमी आती है और किसानों को नाशीकीटों द्वारा नुकसान झेलना पड़ता है। अतः कीटों का नियंत्रण अत्यंत महत्वपूर्ण है। कीटनाशकों के दुष्प्रभावों को देखते हुए एकीकृत कीट प्रबंधन पर अधिक बल देने की आवश्यकता है।

टमाटर का फलछेदक

यह एक बहुपौधभक्षी कीट है, जो कि टमाटर को नुकसान पहुंचाता है। इस कीट की सुंडिया कोमल पत्तियों और फूलों पर आक्रमण करती है तथा फिर फल मे छेद करके फल को ग्रसित करती है। फलछेदक की मादा शाम के समय पत्तों के निचले हिस्से पर हल्के पीले व सफेद रंग के अंडे देती हैं। इन अंडों से तीन से चार दिनों बाद हरे एवं भूरे रंग की सुंडियां निकलती हैं। पूरी तरह से विकसित सूंडी हरे रंग की होती है, जिनमें गहरे भूरे रंग की धारियां होती है। यह कीट फलों में छेद करके अपने शरीर का आधा भाग अंदर घुसाकर फल का गूदा खाती है। इसके कारण फल सड़ जाता है। इसका जीवनचक्र 4 से 6 सप्ताह में पूरा होता है।

तंबाकू की फलछेदक सुंडी

यह भी एक बहुपौधभक्षी कीट है। इसके अगले पंख स्लेटी लाल भूरे रंग के होते हैं। पिछले पंख मटमैले सफेद रंग के, जिसमें गहरे भूरे रंग की किनारी होती है। इसकी मादा पत्तों के नीचे 100 से 300 अंडे समूह में देती है, जिनको ऊपर से पीले भूरे रंग के बालों से मादा द्वारा ढक दिया जाता है। इन अंडो से 4 से 5 दिनों में हरे पीले रंग की सुंडियां निकलती हैं। ये प्रारम्भ मे समूह में रहकर पत्तियों की ऊपरी सतह खुरचकर खाती हैं। पूर्ण विकसित सूंडी जमीन के अंदर जाकर प्यूपा बनाती है। इस कीट का जीवनचक्र 30 से 40 दिनों में पूरा होता है।

फल मक्खी

फल मक्खी आकार में छोटी होती है, परंतु काफी हानिकारक होती है। यह मक्खी बरसात के मौसम में अधिक नुकसान करती हैं। इनके वयस्कों के गले में पीले रंग की धारियां देखी जा सकती हैं। इस कीट की मादा मक्खी फल प्ररोह के अग्रभाग में अथवा फल के अंदर अंडे देती है। इन अंडों से चार-पांच दिनों में सफेद रंग के शिशु (मैगट) निकल जाते है। ये फलों के अंदर घुसकर इसके गूदे को खाना प्रारंभ कर देते हैं। ये सुंडियां तीन अवस्थाओं से गुजरती हैं तथा मृदा में पूर्णतः विकसित होने पर प्यूपा बन जाती हैं। इन प्यूपा से 8 से 10 दिनों में वयस्क मक्खी निकलती है। यह लगभग एक माह तक जीवित रहती हैं।

सफेद मक्खी

सफेद मक्खी का प्रकोप टमाटर की फसल की शुरूआत से अंत तक रहता है। इस कीट की मक्खी सफेद रंग की होती है और बहुत ही छोटी होती हैं। इसके वयस्क एवं शिशु दो नों ही फलों से रस चूसकर नुकसान पहुंचाते हैं। सफेद मक्खी की मादा पत्तों की निचली सतह में 150 से 250 अंडे देती हैं। ये अंडे बहुत महीन होते हैं जिन्हें नंगी आंखों से नहीं देखा जा सकता। इन अंडों से 5 से 10 दिनों में शिशु निकलते हैं। शिशु तीन अवस्थाओं को पार कर चौथी अवस्था में पहुंचकर प्यूपा में परिवर्तित हो जाते हैं। प्यूपा से 10 से 15 दिनों बाद में वयस्क निकलते हैं और जीवनचक्र फिर से आरंभ कर देते है। इस कीट के शरीर से मीठा पदार्थ निकलता रहता है, जो पत्तों पर जम जाता है। इस पर काली फफूंद का आक्रमण होता है तथा पौधों को नुकसान पहुंचता है।

सफेद मक्खी का पत्तीयों पर प्रकोप

यह एक बहुभक्षी कीट है, जो कि संपूर्ण विश्व में सब्जियों एवं फलों की 50 से अधिक किस्मों को नुकसान पहुंचाता है। इसकी मादा पत्ते के ऊतक एवं निचली सतह के अंदर अंडा देती है। अण्डों से दो-तीन दिनों बाद निकलकर शिशु पत्ते की दो सतहों के बीच में रहकर नुकसान पहुंचाते हैं। ये शिशु सर्पाकार सुरंगों का निर्माण करते हैं। इन सफेद सुरंगों के कारण प्रकाश संश्लेषण की क्रिया प्रभावित होती है तथा फसल की पैदावार पर प्रतिकूल असर पड़ता है। वयस्क शिशु 8 से 12 दिनों बाद मृदा में गिरकर प्यूपा बनाते हैं। इनसे 8 से 10 दिनों बाद वयस्क निकल जाते हैं।

कटुआ कीट

यह कीट छोटे पौधों को काफी नुकसान पहुंचाता है। कटुआ कीट छोटे पौधों को रात के समय काटते हैं और कभी-कभी कटे हुए छोटे पौधों को जमीन के अंदर भी ले जाते हैं। एक मादा सफेद रंग के 1200-1900 अंडे देती हैं। इनमें से चार पांच दिनों बाद सूंडी बाहर निकलती है। इसकी सुंडियां गंदी सलेटी भूरे-काले रंग की होती हैं। ये दिन के समय मृदा में छुपी हुई रहती हैं। पौधरोपण के समय से ही ये पौधे को मृदा की धरातल के बराबर तने को काटकर खाती हैं। इसकी सुंडियां लगभग 40 दिनों तक सक्रिय रहती हैं। इसका प्यूपा भी जमीन के अंदर ही बनता है। इसमें से लगभग 15 दिनों में वयस्क पतंगा निकलता है। इस कीट का जीवनचक्र 30 से 60 दिनों में पूरा हो जाता हैं।

एकीकृत कीट प्रबंधन

- क्षतिग्रस्त फलों को इकट्ठा करके नष्ट कर दें।
- खेत में सफाई पर विशेश ध्यान दें।
- खेतों में फसलचक्र को बढ़ावा दें।
- गर्मियों में खेत की गहरी जुताई करें।
- अण्डों को और समूह में रहने वाली सुंडियों को एकत्रित करके नष्ट कर देन चाहिए।
- टमाटर की 16 पंक्तियों के बाद दो पंक्तियां गेंदे की लगाएं और गेंदे पर लगी सुंडियों को मारते रहें।
- रात्रि के समय रोशनी 'प्रकाश प्रपंच' का इस्तेमाल करना चहिए।
- नर वयस्कों को पकड़ने के लिए 'फेरोमोन प्रपंच' (रासायनिक) का इस्तेमाल भी उपयोगी है। एक एकड़ जमीन में चार से पांच ट्रैप लगाने चाहिए।
- फूल आने पर बैसिल्स थुरिनजियंसिस वार कुर्सटाकी5 लीटर प्रति हैक्टर (70 मि.ली. 100 लीटर पानी में डइपैल 8 लीटर) का छिड़काव करें।
- ट्राइकोग्रामा प्रेटियोसम के अंडो का 20,000 प्रति एकड़ चार बार प्रति सप्ताह की दर से खेतों में प्रयोग करें।
- सफेद मक्खी और पर्ण खनिक को पकड़ने के लिए पीले रंग के चिपचिपे (गोंद लगे हुए) लगे हुए ट्रैप का इस्तेमाल करना चाहिए। प्रति 20 मीटर में एक ट्रैप लगा सकते हैं।
- फल मक्खी के नर वयस्कों को पकड़ने के लिए क्युन्योर नामक आकर्षक या पालम ट्रैप का इस्तेमाल किया जाना चाहिए। 10 ग्राम गुड़ अथवा चीनी का घोल और 2 मि.ली. मैलाथियान (50 ई.सी.) प्रति लीटर पानी में घोल कर छिडकाव करें। मिथाइल यूजीनॉल (40 मि.ली.) और मैलाथियान (20 मि.ली.) (2 मि.ली. प्रति लीटर पानी) के घोल को बोतलों में डालकर टमाटर के खेत में लटकाने से इस कीट को नियंत्रित किया जा सकता है।
- अधिक प्रकोप होने पर क्विनालफॉस 20 प्रतिशत (1.5 मि.ली. प्रति लीटर पानी) या लैम्डा-साईहैलोथ्रिन (5 प्रतिशत ई.सी.) या इमिडाक्लोप्रिड5 मि.ली. प्रति लीटर पानी या ट्रायजोफॉस 1 मि.ली. प्रति लीटर पानी का छिड़काव करें।
- खेत तैयार करते समय मृदा में क्लोरपाइरिफोस 20 ई.सी. 2 लीटर का 20 से 25 कि.ग्रा. रेत में मिलाकर प्रति हैक्टर खेत में अच्छी तरह मिला दें।

तर वत्तर सीधी बिजाई धान: भूजल-पर्यावरण संरक्षण व खेती लागत बचत का वरदान

सीधी बिजाई धान क्रांतिकारी संरक्षण / टिकाऊ कृषि तकनीक

- पर्यावरण हितेषी संरक्षण कृषि तकनीक
- भूजल संरक्षण- ग्रीन हाउस गैसें का कम विसर्जन- सुगम फसल अवशेष पराली प्रबंधन!
- किसान हितेषी टिकाऊ खेती तकनीक
- एक तिहाही भूजल सिचाई, खेती की लागत, श्रम, डीजल, बिजली आदि की बचत
- झंडा रोग मुक्त फसल व पूरी पैदावार!

फसल विविधिकरण किसान हितेषी वैकल्पिक फसल चक्र से ही सम्भव है! वर्षा ऋतु में आधा प्रदेश जल भराव ग्रस्त होने से, धान फसल का कोई व्यवहायरिक विकल्प नही है। सिवाय भूजल बर्बादी वाली धान की रोपाई पर, कानूनी प्रतिबंध 15 जुन की बजाय पहली जुलाई तक बढाकर, भूजल व खेती लागत बचत वाली तर-वत्तर सीधी बिजाई धान तकनीक को प्रोत्साहन दिया जाए। वैसे भी धान फसल किसान हितेषी (40,000 रूपये/एकड लाभ) होने के साथ-2, राष्ट्रहित मे भी है जो भारत की खाध्य सुरक्षा और 63,000 करोड रूपये वार्षिक निर्यात भी सुनिश्चित करती है !

धान फसल से लगातार हो रही भूजल बर्बादी एक गंभीर समस्या है लेकिन लाइलाज नही है। जिसे किसान हितेषी व वैज्ञानिक तौर पर प्रमाणित "तर- वत्तर सीधी बिजाई धान" तकनीक को अपनाकर आसानी से हल किया जा सकता है। जो पिछले वर्ष पंजाब में लगभग सात लाख हेक्टर (यानि प्रदेश के कुल धान क्षेत्र के चोथाई हिस्से) और हरियाना मे लगभग 2 लाख हेक्टर भूमि पर सफलता से बहुत बड़े स्तर पर अपनायी गई और लगभग 28 किवंटल प्रति एकड़ की दर से रोपाई धान के बराबर ही पैदावार मिली। तर-वत्तर सीधी धान तकनीक अपनाने से रोपाई धान के बेकार झंझटों (बुआई से पहले खेत में पानी खड़ा करके पाड़े काटनाद कद्दु करना, पौध बोना, उखाड़ना और फिर से लगाना और तीन महीने खेत में पानी खड़ा रखना आदि) से मुक्ति मिलती है और फसल का झंडाध्बकानी रोग से भी प्रभावी बचाव होता है। तर- वत्तर सीधी बिजाई धान तकनीक मे बुआई मूँग व गेंहू आदि फसलो की तरह बिल्कुल आसान है। जिसे इच्छुक किसान निम्नलिखित विधि अपनाकर, आने वाली पीढ़ियों के भूजल-पर्यावरण संरक्षण और खेती की लागत में भारी बचत कर सकते है।

तर-वत्तर सीधी बीजाई धान तकनीक

1) **तर-वत्तर सीधी बीजाई धान की किस्मे**
धान की सभी किस्मे कामयाब है!

2) **बुआई का समय**
25 मई से 5 जुन तक अच्छी नमी वाले तर- वत्तर खेत मे करे (मानसुन आगमन से एक महीना पहले बुआई करे) यानि सीधी बीजाई धान की बुआई रोपाई धान की पौध नर्सरी की बुआई के समय पर ही करनी है !

3) **सीधी बिजाई धान के लिए खेत की तैयारी**
पहले खेत को समतल बनाए, फिर गहरी सिचाई, जुताई व तर-वत्तर (अच्छी नमी) तैयार खेत मे शाम के समय बुआई करे !

4) **बीज की मात्रा व उपचार**
बुआई से पहले बीज उपचार बहुत जरुरी है ! एक एकड के लिए 8 किलो बीज को 12 घंटे 25 लीटर पानी मे डूबोये, फिर 8 घंटे छाया मे सुखाकर, 2 ग्राम बाविस्टीन और एक मि.ली. क्लोरोपायरीफास प्रति किलो बीज उपचार करे !

5) **सीधी बिजाई धान की बुआई का तरीका**
लाईन से लाईन की दूरी 8-9 इंच , बीज की गहराई मात्र एक इंच रखे! बुआई बीज मशीन के ईलावा छींटा विधि से भी हो सकती है ! बुआई के बाद खेत की नमी बचाने के लिए हलका पाटा(सुहागा) लगाये!

6) **खरपतवार नियंत्रण**
खरपतवार जमाव रोकने को, बुआई के तुरंत बाद 1.5 लीटर पेंडामेथेलीन प्रति एकड 200 लीटर पानी मे छिडकाव जरुर करे और आवश्कता पड़ने पर 20- 25 दिन बाद 100 लीटर पानी प्रति एकड मे 100 मि. ली. नामिनी गोल्ड (बिस्पाईरीबेक सोडीयम), या 400 मि.ली. राईस स्टार (फेनोक्सापरोप पी ईथाइल) या 8 ग्राम अलमिक्स (क्लोरीम्यूरान ईथाइल मेटसल्फूरान मिथाइल) या 90 ग्राम कौंसील एकटीव (ट्राईमाफोन 20% एथोक्सीसल्फूरान 10) या 250 ग्राम 2,4- डी 80 प्रतिशत सोडीयम साल्ट का छिडकाव करे!

7) **सीधी बिजाई धान की सिचाई**
पहली सिचाई देर से 21 दिन के बाद और बाद की सिचाई 10 दिन के अंतराल पर गीला दृ सुखा प्रणाली से वर्षा आधारित करे ! बुआई के बाद अगर पहले सप्ताह मे बे-मौसम वर्षा से भूमि की ऊपरी सतह पर करंड (मिट्टी सख्त हो), तो तुरंत हलकी सिचाई करे वर्ना धान के उगे नये पौधे भूमि की सतह से बाहर नही निकल पायेंगे !

8) **खाद की मात्रा**
रोपाई धान की अनुमोदित दर और विधि से ही करे ! धान फसल मे प्रति एकड सामान्यता 40 किलो नाईट्रोजन, 16 किलो फासफोरस और 8-10 किलो पोटाश की जरुरत होती है!नाईट्रोजन की एक तिहाही और फासफोरस की पूरी मात्रा बुआई के समय प्रयोग करे, जो एक बेग डी.ए. पी. प्रति एकड से पूरी हो जाती है! यूरिया और म्यूरेट आफ पोटाश (डच) उर्वरको का प्रयोग मशीन के खाद बक्से मे नही रखना चाहिए! इन उर्वरको का प्रयोग टाप ड्रेसिंग के रुप मे पहली सिचाई यानि 21दिन बाद करना चाहिए, उसी समय 10 किलो जिंक सल्फेट प्रति एकड भी डालना चाहिए ! इस विधि से ऊगाई धान फसल की शुरुवाती अवस्था मे अक्सर , आयरन की कमी से पौधो मे पीलापन देखा जाता है उसके लिए, एक प्रतिशत आयरन सल्फेट का छिडकाव एक सप्ताह अंतराल पर दो बार करे ! फसल मे बालिया निसरने पर एक किलो घूलनशील इफको उर्वरक

9) **कीट-बिमारीया प्रबंधन**

रोपाई धान की अनुमोदित दर और विधि से ही करे, लेकिन ध्यान रखे कि रसायनिक दवायो का प्रयोग अनुमोदित दर से ज्यादा कभी नही करे ! तने की सुंडी (गोभ के कीडे) के 25-35 दिन के फसल अवस्था पर 8 किलो कारटेप रेत मे मिलाकर तथा पत्ता लपेटद तना छेदक के लिए 200 मि .ली . मोनोक्रोटोफास या कलोरोपायरीफास या 400 मि .ली. क्वीनलफास 100 लीटर पानी मे प्रति एकड प्रयोग करे! धान निसरने के समय, हल्दी रोग या ब्लास्ट से बचाव के लिए 200 ग्राम कार्बेडाजिम या प्रोपीकानाजोल (टिलट) 200 लीटर पानी प्रति एकड छिडकाव करे ! शीट ब्लाईट के लिए 400 मि. ली. वैलिडामाईसिन (अमीस्टारथ्रलस्टर आदि) 200 लीटर पानी प्रति एकड छिडकाव करे ! फसल मे दीमक की शिकायत होने पर , एक लीटर कलोरोपायरीफास प्रति एकड सिचाई पानी के साथ चलाये !

10) **सीधी बीजाई तकनीक के बारे मे सावधानिया**

- इस विधि से बोयी गई फसल रोपाई धान के मुकाबले पहले 40 दिन हलकी नजर आयेंगी, इसलिये किसान होसला बनाए रखे!
- सीधी बुआई धान खारे पानी और सेम व लवनीय भूमि मे खास सफल नही है ! ऐसे क्षेत्रो मे किसान रोपाई धान ही लगाये!
- 15 जुन के बाद धान की सीधी बिजाई नही करे और तब रोपाई विधि से धान की खेती फायदेमन्द रहेंगी !
- बुआई समय पर कम तापमान व फसल पकाई समय पर मानसुन वर्षा के कारण साठी धान (मार्च-अप्रेल बुआई) मे सीधी बीजाई तकनीक कामयाब नही है !

11) **सुगम पराली (फसल अवशेष) प्रबंधन**

सीधी बिजाई धान फसल आमतौर पर रोपाई धान के मुकाबले 7-10 दिन पहले पकती है जिससे किसानो को पराली प्रबंधन मे धान कटाई के बाद ज्यादा मिलने से भी पराली प्रबंधन मे सहायता मिलती है ! इस विधि मे किसान जल्दी पकने वाली कम अवधी (125 दिन) की किस्मो पूसा बासमती- 1509, पी.आर -126 आदि की खेती से, धान फसल की कटाई सितम्बर महीने मे कर सकते है! जिससे फसल अवशेष (पराली) को भूमि मे दबाकर, गेंहू फसल की बुआई से पहले ढेंचा या मूँग की हरी खाद के लिए फसल ली जा सकती है! जो भूमि ऊर्वरा शक्ती बढाने और पराली जलाने से उत्पन होने वाले वायु प्रदूषण को रोकने मे भी रामबाण साबित होगी !

मसालों के लिए सबसे बेहतरीन पतली मिर्च की सर्वश्रेष्ठ किस्में

मिर्ची का नाम सुनते ही कुछ मीठा खाने का मन करता है, लेकिन उस से ज्यादा मन मिर्च खाने का होता है। बिना मिर्ची के किसी भी सब्जी , पकवान, मसाला, अचार और अन्य भोजनों मे स्वाद ही नहीं आता। मिर्ची को हम मसाले बनाने के लिए भी बहुत ज्यादा काम में लेते है। भारत के पश्चिमी और उतरी इलाको में सबसे ज्यादा मिर्ची खाई जाती है। आइये आज हम जानते हैं मसालों के लिए सबसे बेहतरीन पतली मिर्च की सर्वश्रेष्ठ किस्में खूबीपसप चमचचमत,। मिर्ची का सबसे पहले उत्पादन या फिर जन्म स्थान की बात करे तो वह है दक्षिणी अमेरिका। उसके बाद यह धीरे धीरे संपूर्ण विश्व भर में फैली है। भारत में मिर्ची की सबसे ज्यादा खेती आंध्र प्रदेश में होती है। यही से भारत की सबसे ज्यादा मिर्ची संपूर्ण देश भर में बेची जाती है। मिर्ची में भी बहुत सारी किस्में होती है। जैसे शिमला मिर्च जिसे हम सब्जी बनाने में काम में लेते है क्योंकि ये इतनी ज्यादा तीखी नही होती है। वही दूसरी ओर लाल मिर्च को मसाले और आचार बनाने के काम में लेते है, क्योंकि लाल मिर्च स्वाद में काफी तेज होती है।

ऐसे में आज हम आपको बताएंगे कुछ ऐसी ही पतली और स्वाद में तीखी मिर्ची के बारे में :-

मिर्ची की इन 7 किस्मों को सबसे ज्यादा पसंद किया जाता है।

पंजाब की लाल मिर्च (पंजाब लाल) :-
पंजाब की लाल मिर्च बहुत ही ज्यादा तीखी और स्वादिष्ट होती है। पंजाब लाल मिर्ची का एक पौधा होता है जिसकी ऊंचाई लगभग 10-12 सेंटी मीटर होती है। शुरुआती दौर में यह मिर्च आम मिर्च की तरह हरी होती है लेकिन उसके बाद पूर्ण रूप से पकने पर लाल रंग की हो जाती है। अगर हम हरी मिर्च और लाल मिर्च के मुनाफे की बात करे तो सालाना हरी मिर्च 75 क्विंटल होती है वहीं दूसरी तरफ लाल मिर्च 10 क्विंटल ही होती है।

पूषा ज्वाला पतली तेज मिर्च :-
पूषा ज्वाला मिर्ची दिखने में पतली होती है लेकिन स्वाद में बहुत ही तीखी होती हैं। इसका सबसे ज्यादा इस्तेमाल मसाले और आचार बनाने में किया जाता है, क्योंकि इसका स्वाद मसाले और आचार के लिए सबसे बेहतरीन माना जाता है। इसके अंदर विटामिन ए की मात्रा काफी ज्यादा होती है । इसी कारण इस मिर्ची को कई प्रकार की औषधीयां और दवाइया बनाने के लिए मेडिकल उपयोग में भी किया जाता हैं।

कल्याण पूर चमन मिर्ची :-
कल्याण पूर मिर्च का नाम कल्याण पूर गांव के नाम पर रखा गया। वही से इस प्रकार की मिर्च का सबसे ज्यादा निर्यात होता है।कल्याण पूर मिर्च शंकर किस्म की मिर्च के अंतर्गत आती हैं। खाने और मसाले बनाने में इसका इस्तेमाल किया जाता हैं। कल्याणपुर चमन मिर्ची को उगाने के लिए आप छोटे छोटे खबड़े बनाकर उसके अंदर खाद और उर्वरक डालकर मिट्टी तैयार कर ले। उसके बाद आप इसे बीजों के द्वारा भी लगा सकते हैं और पौधों की रोपाई के द्वारा भी लगा सकते हैं।

भाग्य लक्ष्मी मिर्च :-
भाग्य लक्ष्मी का मतलब होता है की भाग्य में मिलने वाली लक्ष्मी लेकिन यहां पर हम मिर्च की बात कर रहे है ना की पैसे की।भाग्य लक्ष्मी किस्म की मिर्ची दिखने में काफी पतली होती हैं।यह मिर्च इतनी ज्यादा प्रसिद्ध है की इसकी खेती संपूर्ण भारत में की जाती हैं। भाग्यलक्ष्मी मिर्च का निर्यात भी आज कल बढ़ गया है। इसकी पैदावार भी अच्छी होने लगी है ,सुक्ष्ण कटिबंधीय इलाको में।

आंध्र की आंध्र ज्योति मिर्च :-
यह एक बहु दृ वर्षीय किस्म है जिसकी एक साल में बहुत बार खेती की जा सकती है। आंध्र ज्योति मिर्च काफी जल्दी पक कर तैयार हो जाती हैं। इसकी पैदावार भी बहुत ज्यादा होती हैं।इस किस्म की मिर्च की फलियां काफी लंबी और पतली होती हैं। साथ ही साथ इसमें रोगों और बीमारियों से लड़ने के लिए बहुत ज्यादा क्षमता होती हैं। आंध्र प्रदेश की आंध्र ज्योति मिर्च को पकने के लिए हमेशा गर्म जलवायु पसंद आती हैं।

जवाहर मिर्च :-
जवाहर मिर्च की किस्म को भारत में सबसे ज्यादा इस्तेमाल में लीया जाता हैं। जवाहर मिर्च को सबसे उत्तम मिर्च माना जाता हैं। यह मिर्च थायपास और मायटास के लिए बहुत ही ज्यादा स्वेदनशील होती है। इस मिर्च को संपूर्ण रूप से तैयार होने में तकरीबन 120 से 130 दिनों का समय लगता है। हरी मिर्च और लाल मिर्च का अगर हम अंतराल देखे तो लाल मिर्च हरी मिर्च से काफी कम मात्रा में होती है।

अर्का मेघना मिर्च :-
इस किस्म की मिर्च के पौधे दूसरी मिर्च की किस्म से काफी अलग होते है। इस मिर्च के पौधे काफी लंबे और गहरे हरे लाल रंग के होते हैं। अर्क मेघना मिर्च हरी और लाल दोनो प्रकार की फलियों के लिए बहुत ही ज्यादा उपयुक्त होती हैं। इसकी फलियों की लंबाई 10 सेंटी मीटर से लेकर 15 सेंटी मीटर तक होती है। यह मिर्च 3 से 4 टन प्रति साल होती है एक ही फसल से। मसालों के लिए सबसे बेहतरीन पतली मिर्च की सर्वश्रेष्ठ किस्में ख्बीपसप चमचचमत अंतपमजपमे इमेज वित चपबमे, जो उपरोक्त दी गयी हैं, इनके अलावा आप की जानकारी में मिर्च की किस्में जो आप यहां पोस्ट में डलवाना चाहें, तो कृपया कमेंट में जरूर साझा करें।

मिर्ची की तुडाई के लिए सबसे अच्छा समय :-

अलग अलग प्रकार की मिर्च की किस्म के लिए तुड़ाई का समय अलग अलग होता है। सामान्य प्रकार की मिर्च के लिए आप मिर्च की रोपाई करने के 80 से 90 दिनों के बीच में पक कर तैयार हो जाती है। इसके बाद आप आराम से मिर्ची की फलियों की तुड़ाई कर सकते हैं , हालांकि यदि आपको हरी मिर्च चाहिए तो आपको पहले तुड़ाई करनी होगी और लाल मिर्च के लिए थोड़ा और समय देना होगा। सुखी यानी की सूखी लाल मिर्च के लिए आपको 140 से 150 दिनों तक का समय लगेगा। हरी मिर्च की पैदावार की बात करें तो यह 150 से 200 क्विंटल प्रति हेक्टेयर होती है और वहीं दूसरी तरफ लाल मिर्च की पैदावार मात्र 20 से 25 क्विंटल प्रति हेक्टर होती है। धोकर सुखा लिया जाता है।

मिर्च में लगने वाले रोग और बीमारियों से इस प्रकार छुटकारा पाएं :-

मिर्ची की फसल में सबसे ज्यादा लगने वाला रोग होता है फल गलन यानी की टहनी मार रोग। यह रोग इतना खतरनाक होता है कि यदि किसान भाई सही समय पर इसकी रोकथाम ना करें तो यह मिर्ची की पैदावार को बहुत ज्यादा कम कर देती हैं। ऐसे में किसानों को काफी ज्यादा नुकसान होता है।इस रोग में मिर्ची के पौधों की पत्तियों और फलियों पर काले और भूरे रंग के छोटे-छोटे धब्बे बनना शुरू हो जाते हैं। एक बार जब यह धब्बे बनना शुरू हो जाते हैं तो उसके कुछ ही समय बाद इन पर फफूंदी लग जाती हैं जो पत्तियों को संपूर्ण रूप से नष्ट कर देती हैं। ऐसे में मिर्ची का पूरा पौधा रोग के कारण मुरझा जाता है। हालांकि कई बार यह रोग हो जाने के बाद भी मिर्ची की पैदावार अच्छी होती हैं लेकिन मिर्ची की क्वालिटी और स्वाद बिल्कुल भी अच्छा नहीं होता है।इस रोग से बचने के लिए आप 400 ग्राम कॉपर ऑक्सिक्लोराइड और मैनजॉब या फिर जिन्आय को 200 लीटर पानी में मिलाकर 1 एकड़ के हिसाब से प्रति सप्ताह दो-तीन दिन के अंतराल से छिड़काव करें। धोकर सुखा लिया जाता है। यह जरूर याद रखें कि इसका छिड़काव प्रतिदिन ना करें क्योंकि यह काफी हानिकारक होता है मिर्ची के पौधों के लिए। 10 से 15 दिन तक इस प्रकार छिड़काव करने से काले और भूरे धब्बे सभी हट जाते हैं और पौधा पूर्ण रूप से विकसित होने लगता है जिसके कारण अच्छी पैदावार होती हैं। इसी के साथ आप यह भी याद रखें कि समय-समय पर पौधों पर कीटनाशकों का छिड़काव और खाद और उर्वरक देते रहें ताकि पौधों में पोषक तत्व और विटामिंस की बिल्कुल भी कमी ना आने पाए।

बकरी पालन और नवजात मेमने की देखभाल में रखे यह सावधानियां

पशुपालन की बात करें, तो हम बकरियों को कैसे भूल सकते हैं। इन बकरियों का इस्तेमाल किसान प्राचीन काल से ही करते आ रहे हैं। क्योंकि इन से प्राप्त गोबर से बनी जैविक खाद कृषि उत्पादन के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण होती है। बकरियों का मुख्य स्त्रोत वैसे तो दूध देना होता है। परंतु या किसानों के लिए बहुत ही लाभदायक होती हैं। किसान खेती तथा पशुपालन कर अपना आय निर्यात करते हैं। यह कार्य किसान प्राचीन काल से करते चले आ रहे हैं। बकरियों का कृषि उपज में बहुत महत्वपूर्ण योगदान है कृषि के कई कार्यो में इनका इस्तेमाल किया जाता है। कभी-कभी किसानों को अपने खेत द्वारा फायदा नहीं होता तो वह पशुपालन की ओर बढ़ते है। कुछ ही वक्त में किसान पशुपालन से ज्यादा लाभ उठा लेता है। बकरी पालन व नवजात मेमने की देखभाल रखे कुछ सावधानियां। यदि आप भी पशुपालन द्वारा धन की प्राप्ति करना चाहते हैं। तो यह उच्च विचार है क्योंकि आप बकरी पालन में बहुत ज्यादा फायदा उठा सकते हैं। अब आप यह सोच रहे होंगे, कि बकरी पालन में इतना फायदा क्यों होता है, क्योंकि या मार्केट में उचित दाम पर बिकते हैं। जिससे आपको अच्छी धन की प्राप्ति होती है।बकरियों को बाजार में बेचने में कोई समस्या नहीं होती। किसान के लगाए हुए मूल्य पर यह बकरियां मार्केट में बिका करती हैं।

बकरियों की भारतीय नस्ले:

किसान द्वारा पशुपालन की नस्लों को निम्नलिखित भागों में बांटा गया हैं। पूर्ण रूप से भारत में लगभग 21 मुख्य बकरियों की नस्लें पाई जाती है।

बकरियों की दुधारू नस्ले:

किसान द्वारा पशुपालन की नस्लों को निम्नलिखित भागों में बांटा गया हैं। पूर्ण रूप से भारत में लगभग 21 मुख्य बकरियों की नस्लें पाई जाती है।

बकरी पालने करने के तरीके:

बकरियों को पालने के लिए आपको बहुत बड़ी जगह की आवश्यकता नहीं होती।आप साधारण स्थान पर भी उनका पालन पोषण कर सकते हैं। उन्हें आप अपने घर के किसी भी हिस्से में आसानी से रख सकते हैं।वह भी काफी बड़ी मात्रा में , अगर आप भी बकरी पालने का काम शुरू करना चाहते हैं। तो आपको बड़ी जगह लेने की जरूरत नही पड़ेगी। बकरी पालन का मुख्य क्षेत्र बुंदेलखंड है। जहां इन बकरियों का पालन पोषण किया जाता है। या बकरियां खेतों में घूमते फिरते, चारा चर अपना पेट भर लेती हैं। बकरियों के लिए अलग से चारों की कोई आवश्यकता नहीं पड़ती है।

बकरियों की प्रजनन क्षमता:

बकरियों की प्रजनन क्षमता बहुत होती हैं ,यह सिर्फ करीबन डेढ़ साल की उम्र में ही बच्चा प्रजनन करने की क्षमता रखती है। 6 से 7 महीनों के अंदर उनका जन्म हो जाता है। एक बकरियां एक बार में तीन से चार या की-कभी उससे अधिक बच्चे भी पैदा करती हैं। इनकी वृद्धि का यह भी मुख्य कारण है। कि यह 1 साल में दो बार प्रजनन क्षमता की शक्ति रखती हैं।जिससे इनकी संख्या में काफी वृद्धि हो जाती है। किसान या बकरियों के मालिक इनको लगभग 1 वर्ष की उम्र में या फिर उससे कम समय से ही बेचना शुरू कर देते हैं।

बकरियों को पालते समय कुछ सावधानियां बरतें:

- जब बकरियों के बच्चे छोटे होते हैं, तो उनको बहुत सावधानी के साथ रखना पड़ता है क्योंकि कुछ जंगली जानवर उनको नोच, दबाकर खा लेते हैं।
- कम आबादी वाले क्षेत्र में जंगल बहुत ही पास होता है जिसकी वजह से जंगली जानवर बकरियों को खाने के लिए उनकी महक सूंघकर आते हैं।
- बकरियों को हरे चारे बहुत पसंद होते हैं जिसकी वजह से वह खेत की ओर भागते हैं, इसीलिए खेत को सुरक्षित रखने के लिए बकरियों से सावधानी बरखनी चाहिए।

- बकरियों के दूध में बहुत तरह के पौष्टिक तत्व पाए जाते हैं ,परंतु दूध में आने वाली महक लोगों को अच्छी नहीं लगती हैं, जिसकी वजह से बकरियों के दूध नहीं बिकते।
- बारिश के मौसम में आपको इनकी देख रेख बहुत अच्छे ढंग से करनी होती है क्योंकि यह गीले स्थान पर बैठना पसंद नहीं करती हैं।
- गीली जगह पर बैठने से बकरियों को कई तरह के रोग हो जाते हैं।
- बकरियों के अच्छे स्वास्थ्य के लिए इनको प्रतिदिन जंगलों या खेतों में चराना बहुत ही आवश्यक होता है।
- बकरी पालने के लिए आपको किसी तकनीकी या किसी भी अन्य ज्ञान की कोई आवश्यकता नहीं पड़ती है। यह व्यवसाय काफी तेजी से बढ़ रहा है शहरों से कई लोग बकरी खरीदने के लिए गांव की ओर रुख करते हैं।
- किसी भी तरह की आपत्ति या जरूरत आने पर आप उचित दामों में बकरी या बकरे को बेचकर धन की प्राप्ति कर सकते हैं यह व्यवसाय आय के साधनों को बढ़ाता है।

गाभिन बकरिया :

किसान गाभिन बकरियों की निम्नलिखित तरीकों से जांच करते हैं वह कुछ इस प्रकार है:

जब बकरियां गाभिन होती हैं तो उनको और उचित पोषक तत्व की जरूरत पड़ती है।ताकि उनको अपने शिशु को जन्म देते हुए कोई तरह परेशानी ना हो। गाभिन बकरियों को अतिरिक्त पोषण के साथ कीड़ा में लिप्त मैमनों से सुरक्षा का उचित ख्याल रखना होता है। बकरियां अतिरिक्त 144 या 152 दिन के अंदर अपना गर्भ धारण कर लेती हैं। पौष्टिक तत्व बकरियों की प्रजनन क्षमता को बहुत बढ़ाता है। जिससे या अधिक संतान पैदा कर सके। पौष्टिक तत्व की बिना पर यह जुड़वा बच्चे देने में भी सक्षम होती हैं।

बकरियों के प्रसव से जुडी कुछ सावधानियां:

जब बकरियां प्रसव के करीब रहे, तो उनकी अच्छे से देखभाल करना आवश्यक होता है। किसान को उनके प्रसव के टाइम पर पूर्ण निगरानी रखनी चाहिए। जब प्रसव एकदम करीब आ जाए तो उसकी तैयारी के लिए किसानों के पास दूध की छोटी बोतल का होना जरूरी है ताकि वह नवजात शिशु को दूध पिला सके। बकरियों के बच्चों के लिए अच्छा टिंक्चर आयोडीन तथा प्रतिजैविक दवाइयों का देना आवश्यक है। यदि बकरियां किसी भी प्रकार से जन्म देने के लिए तैयार ना हो तो पशु चिकित्सालय से संपर्क करें।

बकरियों के नवजात मेमने की देखभाल

बकरियों के बच्चे जैसे पैदा हो उनका मुंह ,नाक साफ कपड़े से अच्छी तरह पोछे।

- उनकी नाभि से कुछ दूरी पर नाल कांटे और साफ धागे से टिंचर लगा दे।
- नवजात शिशु अच्छे से चल सके। इसको नजर अंदाज नहीं किया जा सकता। इसलिए उनकी की खुरसाफ करते हुए तोड़ कर अलग कर दें। जिससे बच्चा आसानी से खड़ा हो सके।
- नवजात बकरियों के शिशु को मां के पास ही रखें।ताकि बकरियां उन्हें चाट कर उनके बदन में गर्मी पैदा कर सके।
- पोटाश के पानियों से बकरियों के धन स्थल को अच्छे से साफ करें।
- नवजात शिशु के लिए दूध बहुत ही उपयोगी होता है। जितना जल्दी हो सके वह बकरी का दूध पी ले। जिससे विभिन्न प्रकार की बीमारियों से नवजात शिशु की रक्षा हो सके।
- 15 दिन के बाद बकरियों के शिशु को नरम हरा चारा देने की शुरुआत कर दें। इन में बढ़ोतरी करते रहे। जिससे बच्चा अच्छे से चलने लगे और फुर्तीला बना सके।
- 3 महीने के बाद बकरियों के बच्चों को चरने के लिए खेतों में लेकर जाएं। किसी खुले स्थान पर छोड़ दें ताकि वह चर सके।
- बकरियों के नवजात शिशु का वजन तीन महीनों पर करते रहे। जिससे उनके वजन का अंदाजा हो सके। ऐसा करने से वजन की बढ़ोतरी तथा घटने दोनों की जानकारी हो जाती हैं।
- बकरियों के नवजात शिशु को कृमिनाशक दवाई पिलायें साथ ही साथ उनका टीकाकरण भी करें, तथा अपने पास के पशु चिकित्सा केंद्र भी जाते रहे।

गर्मियों में हरे चारे के अभाव में दुधारू पशुओं के लिए चारा

आज हम बात करेंगे कि गर्मियों में हरे चारे के अभाव में दुधारू पशुओं के लिए चारा किस प्रकार का देना चाहिए, जिसके आधार पर वो ज्यादा से ज्यादा दूध का उत्पादन कर सकें, जैसे, गेंहू,मक्के की दलिया और भी किसी दलहनी फसल की दलिया पका कर दिया जाता है, ताकि चारा सुपाच्य रहे और दूध भी ज्यादा दे।

गर्मियों में हरे चारे के अभाव में दुधारू पशुओं के लिए चारा:

गर्मियों के मौसम में पशुओं द्वारा दूध बड़ी कठिनाई से प्राप्त होता है। दुधारू पशुओं में दूध का उत्पादन देने की क्षमता गर्मियों के तापमान की वजह से काफी कम हो जाती है। सेंटीग्रेड मापन के अनुसार तापमान गर्मियों में लगभग 30 से 45 डिग्री हो जाता है कभी-कभी तापमान इससे भी ज्यादा बढ़ जाता है।जिसकी वजह से पशुओं में दुधारू की क्षमता काफी कम हो जाती है। यदि पशुओं को गर्मियों में हरा चारा दिया जाए, तो या भारी नुकसान होने से किसान भाई बच सकते हैं। पशुओं को हरा चारा देने से दूध उत्पादन में काफी वृद्धि होती है।गर्मियों के मौसम में पशुओं के आहार व्यवस्था पर विशेष रूप से ध्यान देना चाहिए।

दूध के लिए जरूरी उन्नत चारा:

दुधारू पशुओं को साल भर हरा चारा खिलाने से दूध कारोबारियों में वृद्धि होती है। इसीलिए दुधारू पशुओं को हरा चारा देना चाहिए। हरा चारा ना सिर्फ पशुओं के लिए दूध वृद्धि बल्कि कई प्रकार के विटामिंस की भी पूर्ति करता है। हरे चारे की एक नई लगभग विभिन्न प्रकार की किस्में होती है लेकिन जो किस्में किसान अपने पशुओं के लिए उपयोगी समझता है , वह ज्वार और बरसीम है जो पूर्ण रूप से फसलों पर ही निर्भर होती है।

गर्मियों में हरे चारे के अभाव में दुधारू पशुओं के लिए उत्थान अनाज का चारा:

गर्मियों के मौसम में पशुओं द्वारा दूध उत्पादन प्राप्त करने के लिए निम्न बातों का ध्यान रखना जरूरी है:

गर्मियों के मौसम में पशुओं के तापमान को संतुलित बनाए रखने के लिए ऊर्जा की जरूरत पड़ती हैं। ऊर्जा के लिए पशुओं को जौ , मक्का आदि की आवश्यकता होती है। जिससे कि पशुओं को पूर्ण रूप से ऊर्जा की प्राप्ति हो सके।

ध्यान रखने योग्य बातें पशुओं को हो सके, तो आप ज्यादा चारा नहीं दें। क्योंकि चारों की वजह से शरीर में गर्मी बढ़ जाती है।जो कि गर्मियों के मौसम में पशुओं के लिए लाभदायक नहीं होती है। ऐसे में आप चारे की कम मात्रा पशुओं को दें।

पशुओं का आहार संतुलित बनाए रखने के लिए पशुओं को आहार के रूप में प्रोटीन , खनिज विटामिन, ऊर्जा आदि को देना आवश्यक है।विशेष रूप से ध्यान देना चाहिए।

पशुओं से ज्यादा दूध प्राप्त करने के लिए उनको गेंहू/मक्के के चारे देना:

गर्मियों के मौसम में पशुओं से ज्यादा दूध प्राप्त करने के लिए उनको मक्का, जौ, गेंहू, बाजरा आदि के चारे देना बहुत ही लाभदायक होता है। क्योंकि गेहूं और मक्का बाजरा आदि में लगभग 35: पोषक तत्व मौजूद होते हैं जिसे खाकर गाय, भैंस भरपूर दूध की मात्रा का उत्पादन करती है।अगर आप मक्का ,बाजरा, जौ इन तीनों में से किसी एक को भी भोजन के रूप में देना चाहते हैं तो कम से कम आपको 35:भाग देना होगा। जिसे खाकर गाय, भैंस पूर्ण रूप से दुधारू का निर्यात कर सकें।

गाय, भैंस को दलिया खिलाने के फायदे:

मनुष्य हो या फिर पशु दोनों को भोजन पचाने के लिए ऊर्जा की आवश्यकता होती है। गायों और भैंस को दलिया खिलाने से पूर्ण रूप से ऊर्जा प्राप्त होती है। पशुओं को अपने भोजन को पचाने के लिए ऊर्जा की काफी जरूरत होती है इसीलिए दलिया पकाकर खिलाने से पशुओं को ऊर्जा मिलती हैं। प्रसूति से पहले और बाद में इन दोनों ही अवस्थाओं में पशुओं को दलिया खिलाना बहुत ही लाभदायक होता है। दलिया को बचाने में काफी कम उर्जा लगती हैं।

गाय को मक्का खिलाने के फायदे:

दुधारू पशुओं में दूध की मात्रा को बढ़ाने के लिए मक्का की खली बहुत ही लाभदायक है क्योंकि मक्का में मौजूद पोषक तत्व आसानी से पच जाते हैं। मक्के की खली भिगोने के बाद काफी फूल जाती है जिससे इसका वजन भी काफी बढ़ जाता है। मक्के की खली को भोजन के रूप में देने से दुधारू पशुओं में दूध उत्पादन की मात्रा में बहुत बढ़ोतरी होता है। इस तरह से हम हरे चारे के अभाव में दुधारू पशुओं के लिए चारा का इंतजाम कर सकते हैं।

दुधारू पशुओं के लिए साल भर हरे चारे का इंतजाम करनो:

किसानों के लिए अपने दुधारू पशुओं का पालन करने के लिए साल भर हरे चारे दे पाना बहुत ही मुश्किल होता है। वहीं दूसरी ओर दुधारू पशुओं को चारे के साथ-साथ पौष्टिक दानों की भरपूर मात्रा वह हरे चारे की बहुत ही ज्यादा आवश्यकता होती है,पशुओं को भोजन के रूप में देने के लिए। हरा चारा न केवल दूध उत्पादन बल्कि विभिन्न प्रकार के रोगों से भी सुरक्षा प्रदान करता है। पशु इसे खाकर विभिन्न प्रकार के रोग से खुद का बचाव करते हैं तथा निरोग रहते हैं। किसान अपने पशुओं को जई, मक्का ,बाजरा लोबिया, बरसीम, नैपियर घास ,मूंग उड़द आदि को हरे चारे के रूप में पशुओं को देते हैं। परंतु यह सभी चारे गर्मियों के मौसम में नहीं मिल पाते और पशु पालन करने वाले निराश होकर अपने पशुओं को सूखा चारा व दाना खिलाने पर पूरी तरह से मजबूर हो जाते हैं। इन सभी स्थिति के कारण पशुओं में दूध देने की क्षमता काफी कम हो जाती है जो किसान भाइयों के व्यापार के लिए

पशुओं के लिए हरा चारा बनाना:

साइलेज द्वारा हरे चारे का इस्तेमाल किया जाता है। साइलेज बनाने के लिए हरे चारे और पोषक तत्वों से भरपूर खाद्यानन को अच्छी तरह से मिस किया जाता है। साइलेज की सहायता से पशुओं में दूध देने की क्षमता तेजी से बढ़ती है। इसकी सहायता से हरे चारे काफी लंबे टाइम तक सुरक्षित रखने में मदद मिलती है।साइलेज की सहायता से हरे चारों में मौजूद पौष्टिक तत्व नष्ट नहीं हो पाते तथा और भी पोषक तत्व की बढ़ोतरी होती रहती है। किसान भाई हरे चारे की प्राप्ति के लिए अपनी फसल की कटाई के दौरान हरे चारे को धूप में सुखाकर अच्छे से रख लेते हैं। ताकि सालभर हरा चारा ना मिलने पर वह अपने पशुओं को सूखे हुए हरे चारों का इस्तेमाल कर पशुओं से दूध की प्राप्त कर सकें। इस तरह से हम हरे चारे के अभाव में दुधारू पशुओं के लिए चारा का इंतजाम कर सकते हैं।

दमदार ट्रैक्टर का दौर

देश में बढ़ते हुए मशीनीकरण के दौर में किसान भाइयों को खेती करना बहुत आसान हो चुका है, जिसमे ट्रैक्टर का अनवरत चला आ रहा अकथनीय योगदान रहा है। हम जब हमारे बचपन को याद करते हैं, तो अस्सी के दशक में बहुत कम ही किसानों के पास ट्रैक्टर हुआ करते थे और उस दौर में भी ट्रैक्टर के उपयोग की सीमा भी ज्यादा नहीं रहा करती थी। उस समय किसान भाई खेती के लिए ज्यादातर पशुओं पर निर्भर रहते थे, जिससे खेती का कार्य अत्यंत कठिन हो जाता था। एक तरफ जहां किसान पशु और प्रकृति पर निर्भर थे, वहीँ दूसरी तरफ समय और परिश्रम भी ज्यादा लगता था। पर बदलते दौर में धीरे धीरे इसमें सुधार आने लगा, जिसके परिणामस्वरूप आज के किसानों की जटिलता कम हो गयी और उनके समय की बचत एवं आर्थिक सुधार का दौर आ गया। जब हम किसानों की कठिनाईयों की बात करते हैं तो ट्रैक्टर की याद जरूर आती है। सर्व प्रथम ट्रैक्टर के विषय में उन्नीसवीं शताब्दी में जाना गया। मगर भारत में इसकी शुरुआत हरित क्रांति से ही हो गयी थी। स्वतंत्रता के बाद जहाँ भारत में एक तरफ इसका इस्तेमाल तेजी से होने लगा और इसकी मांग बढ़ गयी वहीँ दूसरी तरफ १८४० से १८५० के बीच ही अपने देश में ट्रैक्टर निर्माण का कार्य भी शुरू हो चुका था। आधुनिक कृषि उपकरण में ट्रैक्टर का स्थान कोई अन्य नहीं ले सकता है। इसकी सहायता से कठिन से कठिन कार्य भी आसानी से हो सकता है। इसका उपयोग कृषि से सम्बंधित अन्य उपकरणों को चलाने व खींचने में भी किया जाता है। कृषि क्षेत्र में ट्रैक्टर का इस्तेमाल जोतने, बीज बोने, फसल लगाने और काटने जैसे कार्यों में होता आ रहा था, परन्तु अब लकड़ी चीरने, सामान ढोने, सब्जी बोने एवं निकालने आदि कार्यों में भी होने लगा है। अगर ट्रैक्टर के बनावट की बात करें तो इसमें इंजन और उसके साधन चेसिस और पावर ट्रान्समीटिंग सिस्टम मुख्य होते हैं। सामान्यतः ट्रैक्टर के दो मुख्य प्रकार होते हैं। जिसमे पहला प्रकार व्हिल्ड ट्रैक्टर का उपयोग किसानों द्वारा कृषि कार्यों में होता है और दूसरा प्रकार ट्रैक ट्रैक्टर का उपयोग औद्योगिक क्षेत्रों में एवं बाँध बनाने जैसे कार्यों में किया जाता है।

भारत एक कृषि प्रधान देश है जिसके कारण कृषि से होने वाले आर्थिक फायदे और नुक्सान का हमारे देश में गहरा प्रभाव पड़ता है। आज के दौर में ट्रैक्टर कृषि क्षेत्र में महत्वपूर्ण भागीदार रहा है। इसके बगैर आज की कृषि भी संभव नहीं है। किसानों की बढ़ती हुई मांग की आपूर्ति के लिए आज दुनिया भर में २० प्रतिशत ट्रैक्टर का निर्माण सिर्फ भारत में ही होता है। आजादी से पहले रूस से भारत ट्रैक्टर का आयात करता था। परिणामस्वरूप यह बहुत महंगा हो जाता था, जिस वजह से सभी किसानों को यह आसानी से सुलभ नहीं था। सिर्फ धनाढ्य लोगों के घरों में ही यह दिखता था। हरित क्रांति के बाद इस कहानी में एक नया मोड़ आया जिसमें भारत में निर्माण कार्य भी प्रारम्भ हो गया। परन्तु इसमें बड़े बदलाव अस्सी के दशक में आया जिससे पैदावार में बढ़ोतरी हुई। धीरे धीरे सन्न १००० तक आते आते भारत ने ट्रैक्टर उत्पादन में अमेरिका को भी पीछे छोड़ते हुए नए मुकाम को हासिल कर लिया। इतने सारे ट्रैक्टर निर्माताओं में, फार्मट्रैक 60 पिछले दशकों से भारतीय किसानों के सबसे प्रिय ट्रैक्टरों में से एक रहा है। फार्मट्रैक 60 विश्व स्तरीय गुणवत्ता और नवीनतम सुविधाओं के साथ स्पष्ट रूप से बड़े और शक्तिशाली ट्रैक्टर के मूल मूल्यों को परिभाषित करता है।

फार्मट्रैक 60 पॉवरमैक्स का नवीनतम संस्करण, अब 55 एचपी और 16.9x28 टायर के साथ आता है। यह निश्चित रूप से 3514 सीसी इंजन और 254 एनएम टॉर्क के साथ तीन सिलेंडर इंजन श्रेणी में सबसे शक्तिशाली ट्रैक्टर है। और देश के सबसे प्यारे ट्रैक्टरों में से एक है। 20-स्पीड गियरबॉक्स प्रत्येक एप्लिकेशन पर 3 या अधिक गति प्रदान करता है जिससे 50: अधिक उत्पादकता मिलती है। इसमें 8x2 गियरबॉक्स का भी विकल्प है। फार्मट्रैक अपनी लिफ्ट की श्रेष्ठता के लिए जाना जाता है जिसे अब सबसे शक्तिशाली 2500
किलोग्राम भारी शुल्क लिफ्ट के साथ बढ़ाया गया है। ये सारे विकल्प इसे कल्टीवेटर, रोटावेटर, हल, प्लांटर जैसे अन्य उपकरणों के लिए बहुत उपयुक्त बनाते हैं।
फार्मट्रैक 60 पॉवरमैक्स ट्रैक्टर भा. रतीय खेतों पर राज करता है और इसे कृषि के राजा के रूप में जाना जाता है। अपनी शक्ति के साथ, सुपर सीडर और रीपर के लिए सबसे उपयुक्त गति, और उन्नत सुविधाओं के साथ यह सबसे बड़े उन्नत उपकरणों को अत्यंत आसानी से चला सकता है। बड़े टायर और ईपीआई में कमी इसे दुलाई और वाणिज्यिक अनुप्रयोगों में भी सर्वश्रेष्ठ बनाती है। यह ट्रैक्टर अपनी कम
ईंधन की खपत और इंजन
विश्वसनीयता के लिए जाना जाता है। साथ ही, कम सेवा लागत और सेवा केंद्रों की एक विस्तृत श्रृंखला इस ब्रांड को किसानों के बीच सबसे पसंदीदा ब्रांड बनाती है। फार्मट्रैक 60 पॉवरमैक्स ट्रैक्टर जो की भारत में निर्मित ब्रांड है, कम ईंधन या कहें जबरदस्त माइलेज वाला इंजन, कम रखरखाव लागत वाली विश्वसनीय इंजन और अन्य क्षमताओं से लैस होने की वजह से बिलकुल पैसा वसूल वाली खरीद है।

सूरजमुखी की फसल के लिए उन्नत कृषि विधियाँ

सूरजमुखी किसानों के लिए बहुत ही मूल्यवान फसल मानी जाती हैं। सूरजमुखी की फसल से जुड़े विभिन्न प्रकार की महत्वपूर्ण जानकारियां जिसको जानकर आप सूरजमुखी के बहुत सारे फायदे से जागरूक हो जाएंगे। किसानों के अनुसार सूरजमुखी एक तिलहनी फसल है। किसानों का यह कहना है कि सूरजमुखी की फसल बेहतर मुनाफा देने वाली फसल है। जिसको आम भाषा में नकदी फसल भी कहा जाता है। प्राप्त की गई जानकारी के अनुसार सूरजमुखी की पहली खेती उत्तराखंड के पंतनगर में हुई थी जिसका समय लगभग 1969 था। किसान सूरजमुखी की खेती खरीफ, रबी और जायद इन तीनों मौसमों में करते हैं। आइये जानते हैं सूरजमुखी की फसल के लिए उन्नत कृषि विधियाँ। कुछ सालों के अनुमान से यह कहा जा सकता है, कि सूरजमुखी की खेती किसानों के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण हो गई है। तथा किसान इसकी उत्पादन क्षमता में वृद्धि भी कर रहे हैं जिससे वह उचित मूल्य प्राप्त कर सकें।

सूरजमुखी की कटाई मई महीने के अंत में ऐसे करें

किसान के लिए सूरजमुखी की फसल बहुत ही फायदेमंद होती है। इसीलिए वह इसकी खास देखभाल करते हैं और इसकी कटाई पर भी विशेष रूप से ध्यान देते हैं। ताकि इस फसल को किसी भी तरह का कोई नुकसान ना हो, जिससे उनको आगे नुकसान सहना पड़े। किसान सूरजमुखी की बुवाई फरवरी के महीने से करना शुरू कर देते हैं ताकि मई के आखिरी महीने में वह इस की कटाई कर अच्छी फसल को प्राप्त कर सकें। यदि सूरजमुखी की बुवाई सही टाइम पर ना करें। तो भारी बारिश हो जाने के बाद पैदावार में काफी हद तक नुकसान भी हो सकता है। सूरजमुखी की फसल की कटाई मई के अंत में करना बहुत ही उचित होता है।

सूरजमुखी के लिए जलवायु और भूमि

सूरजमुखी की खेती के लिए अच्छी जलवायु और भूमि की बहुत ही आवश्यकता होती है। सूरजमुखी की फसलें खरीफ रबी जायद तीनों मौसमों में इसकी खेती की जाती है। सूरजमुखी की खेती के लिए शुष्क जलवायु की बहुत ही आवश्यकता होती है। सूरजमुखी की खेती आप किसी भी भूमि में कर सकते हैं। सूरजमुखी की खेती के लिए अम्लीय एवम क्षारीय भूमि उचित नहीं होती खेती के लिए। वैसे तो आप किसी भी मिट्टी में सूरजमुखी की खेती कर सकते हैं। लेकिन सूरजमुखी की खेती के लिए सबसे उचित दोमट मिट्टी होती है।

सूरजमुखी की फसल के लिए खेत को किस प्रकार तैयार करते हैं:

सूरजमुखी की फसल के लिए उन्नत कृषि विधियाँ:
सूरजमुखी की फसल को तैयार करने के लिए किसान निम्न प्रकार से खेत को तैयार करते हैं जैसे:
किसान सूरजमुखी की खेती जायद मौसम में करते हैं जिससे उनको नमी वाली भूमि की प्राप्ति हो सके। किसान भूमि की ऊपरी परत को चीरकर जुताई करने तथा बीज बोने की प्रक्रिया को शुरू करते है। खेत की पहली जुताई किसान हल द्वारा करते हैं। तीन से चार दिन बाद खेत की जुताई कल्टीवेटर से करना जरूरी होता है। मिट्टी का भुरभुरा पन समय-समय पर देखते रहना चाहिए ताकि उस में नमी बरकरार रहे। सूरजमुखी की खेती के लिए सबसे उचित दोमट मिट्टी होती है।

सूरजमुखी की बुवाई:

सूरजमुखी की अच्छी फसल को प्राप्त करने के लिए आपको कुछ इस तरह से बुवाई करनी चाहिए:
सर्वप्रथम आपको सबसे पहले बीज को रात में भिगोकर रखना होगा। भिगोने के बाद आपको करीबन 3 से 4 घंटा बीज को छांव में रखना होगा। शाम होने पर आपको सुखा. ई हुई बीज को बोना शुरू कर देना चाहिए। सूरजमुखी की फसल के लिए बीज की अलग-अलग मात्रा की आवश्यकता पड़ती है। इसमें आपको संकुल या सामान्य बीजों की आवश्यकता पड़ती है।फसल की बुवाई के लिए आपको करीबन 12 से 15 किलोग्राम प्रति हैक्टर बीज लेना चाहिए। यदि आपको यह आभास हो जाए। कि बीज में जमाव की गुणवत्ता नहीं है तो आपको ज्यादा से ज्यादा बुवाई के लिए बीज लेनी चाहिए। सूरजमुखी की बुवाई के लिए लगभग 2 से 2.5 ग्राम थीरम प्रतिकिलो ग्राम बीज को शोधित कर लेना चाहिए।

सूरजमुखी फसल की सिंचाई का समय:

फसल की अच्छी प्राप्ति के लिए सिंचाई का समय समय पर ध्यान रखना बहुत ही महत्वपूर्ण होता है। किसान सूरजमुखी फसल की पहली सिंचाई बुवाई करने के बाद 20 से 25 दिन के उपरांत करते हैं।किसान यह सिंचाई छिड़काव के रूप में भी करते हैं।10 से 15 दिन के बीच इसकी दोबार सिंचाई करनी होती है। सूरजमुखी फसल की सिंचाई करीबन 5 से 6 बार करनी होती है।जब खेतों में सूरजमुखी के फूल निकल आए तो हल्की सिंचाई करने चाहिए। ताकि पौधे जमीन में ना गिर सके। यदि आप भारी सिंचाई करेंगे तो पानी के प्रभाव से पौधे गिरने लगेंगे।

सूरजमुखी की फसल के लिए मिट्टी की मात्रा:

सूरजमुखी की फसल के लिए लगभग 10 से 15 सेंटीमीटर मिट्टी की आवश्यकता पड़ती है। नत्रजन की टापड्रेसिंग करने के बाद पौधों पर यह मिट्टी चढ़ाई जाती है।किसान हमेशा इस चिंता में रहते हैं। कि सूरजमुखी का पौधा ना गिर जाए, क्योंकि यह आकार में बहुत बड़ा होता है।जिसकी वजह से किसान को इनके गिरने का भय लगा रहता है। मिट्टी चढ़ाने से इनका संतुलन बराबर बना रहता है।

सूरजमुखी फसल की सुरक्षा:

फसल को कीटनाशक कीटों से सुरक्षा प्रदान करने तथा दीमक से बचाने के लिए कई तरह के रसायनों का प्रयोग किसान फसल की सुरक्षा के लिए करते हैं। किसान फसलों की सुरक्षा के लिए मिथाइल ओडिमेंटान में लगभग 1 लीटर तथा 25ई सी साथ ही साथ फेन्बलारेट 750 मिली लीटर प्रति हैक्टर के साथ लगभग 800 से 100 लीटर पानी में मिक्स कर फसलों पर छिड़काव करते हैं। इस प्रक्रिया द्वारा सूरजमुखी फसलों की सुरक्षा कीटों से होती है।

गर्मियों के मौसम मे उगाए जाने वाले तीन सबसे शानदार फूलों के पौधे

गर्मी का समय भारत मे बहुत सारी फसलों और पौधों को उगाने के लिए काफी अच्छा माना जाता है। ऐसे मे यदि आप भी अच्छे फूलों वाले और अपने बागबगीचों को रंगीन बनाना चाहते है, तो यह समय बहुत ही अच्छा है, फूलों वाले पौधों को लगाने के लिए। दर दृ असल गर्मी के समय मे ज्यादा वस्पीकरण होने के कारण जलवायु मे परिवर्तन होता है जिससे पौधों का विकास अच्छे से होता है। आइये जानते हैं गर्मियों मे उगाए जाने वाले फूलों के पौधे की जानकारी।

इन पौधों को लगाने के लिए आप सबसे अच्छा समय मार्च माह से लेकर अप्रैल माह तक मान सकते है। क्योंकि इस समय ना ही तेज हवाएं चलती हैं और ना ही ज्यादा गर्मी होती है ऐसे मे आप एक शांत दिन चुनकर जीनिया , सदाबहार और बालसम जैसे पौधों की बुवाई रोपाई करना शुरू कर सकते हैं। ऐसे मे आज हम आपको तीन ऐसे गर्मी की ऋतु में लगाए जाने वाले पौधों के बारे मे बताएंगे :- जीनिया सदाबहार और बालसम

जिनिया

जीनिया बहुत ही खूबसूरत और रंगीन फूलों वाला बगीचे की शान बढ़ाने वाला फूल होता है। जीनिया काफी तेज गति से उगता है और इसे उगाने मे किसी भी प्रकार की ज्यादा परेशानी भी नहीं होती है। जीनिया पौधे को हम वैज्ञानिक जोहान ट्वीट जिन के नाम से भी जान सकते हैं। जीनिया मे खूबसूरत फूल लगने के कारण यह सबसे ज्यादा तितलियों और अन्य कीड़ों मकोड़ों को बहुत ही ज्यादा लुभाता है। ऐसे मे कई सारी बीमारियां और पौधों मे फूल झड़ने और पौधों के मुरझाने का भी डर सताया रहता है।

जीनिया की उत्पत्ति सबसे पहले उत्तरी अमेरिका मे हुई थी उसके बाद यह अन्य सभी देशों मे वितरित होने लगा। तो चलिए जानते हैं जीनिया पौधे की खेती हम किस प्रकार कर सकते हैं:-

1.**जीनिया पौधे की सिंचाई इस प्रकार करें** :-

जीनिया पौधे की सिंचाई हमेशा उसकी जड़ों पर की जाती हैं ना कि उसकी टहनियों शाखाओं और पत्तियों पर। क्योंकि यह पौधा बहुत कम समय में विकसित होने लगता है और ऐसे मे अगर हम पत्तियों पर पानी डालेंगे तो अन्य प्रकार के कीड़े मकोड़े और बीमारियां लगने का डर रहता है। प्रति सप्ताह दो से तीन बार जीनिया की सिंचाई अवश्य रूप से करनी चाहिए। गर्मी की ऋतु में वाष्पीकरण से बचने के लिए जब जीनिया का पौधा बड़ा हो जाता है तो हम उसके आसपास पत्तियां और घास फूस डाल सकते हैं।

2. **जीनिया पौधे की कटाई और बीजों का सही संग्रह इस प्रकार करें** :-

जीनिया पौधे के बीजों को एकत्रित करने के लिए सबसे पहले आपको इस पौधे के बड़े-बड़े फूलों को नहीं काटना होगा। यदि आप इस पौधे के फूलों को काटना बंद नहीं करेंगे तो फिर बीज नहीं आएंगे। जब फूल एक बार बीज देना शुरू करें तब आप अपने हाथों द्वारा धीरे से मसलकर बीजों को किसी भी बर्तन में धूप में रख कर सुखा दें।

3.**जीनिया पौधे मे लगने वाले कीड़ और बीमारियों का समाधान इस प्रकार करें** :-

पौधों में कीड़े लगना आम बात हैं चाहे वह जीनिया हो सदाबहार हो या फिर बालसम लेकिन जीनिया के पौधों में अक्सर कीड़े बहुत ही कम समय में पड़ने शुरू हो जाते हैं। ऐसे में आप अच्छे से अच्छे कीटनाशकों का छिड़काव करें सप्ताह मे दो-तीन बार। जीनिया के पौधों मे पढ़ने वाले कीट पतंगों को हम अपनी आंखों से आसानी से देख सकते हैं ऐसे में आप सुबह सुबह जल्दी कीटनाशकों का छिड़काव करें और समय-समय पर पौधों को झाड़ते रहे।

गर्मियों मे उगाए जाने वाले फूलों के पौधे रू सदाबहार:

सदाबहार जिसका मतलब होता है हर समय खीलने वाला पौधा। सदाबहार एकमात्र ऐसा पौधा है जो भारत मे पूरे 12 महीना खिला रहता है। भारत मे इसकी कुल 8 जातियां हैं और इसके अलावा इसकी बहुत सारी जातियां बाहरी इलाकों जैसे मेडागास्कर मे भी पाई जाती हैं। सदाबहार बहुत सारी बीमारियों जैसे जुखाम सर्दी आंखों में होने वाली जलन मधुमेह और उच्च रक्तचाप को नियंत्रण में करने के लिए भी किया जाता है। यह बहुत ही लाभ. ादायक और फायदेमंद पौधा होता है। भारत में इसे बहुत सारे इलाकों में सदाबहार और सदाफुली भी कहते हैं।

1. **सदाबहार पौधे की बुवाई ईस प्रकार करें** :-

सदाबहार पौधे की बुवाई करने के लिए सबसे पहले आप कम से कम 6 इंच की गहरी क्यारी तैयार करें। इससे पौधे को अच्छे से उगने में काफी सहायता होती हैं और इसकी जड़े भी मजबूत रहती हैं। जब आप इसकी रोपाई करें उससे पहले आप यह तय कर लें कि 1 इंच मोटी परत की खाद को मिट्टी के अंदर अच्छे से मिलाएं। सदाबहार पौधे की बुवाई के लिए सबसे अच्छा समय सितंबर माह से फरवरी माह के बीच में होता है। इस समय सदाबहार पौधे को ना ही ज्यादा सिंचाई की आवश्यकता होती हैं और ना ही ज्यादा खाद उर्वरक की।

2. **सदाबहार पौधे की सिंचाई और खाद व्यवस्था इस प्रकार करें** :-

सदाबहार पौधे की रोपाई करने के कम से कम 3 महीने के बाद आपको 20-20 दिनों के अंतराल से सिंचाई अवश्य करनी चाहिए। सदाबहार पौधे को कम पानी की आवश्यकता होती हैं ऐसे मे अगर आप ज्यादा सिंचाई करेंगे तो यह इतना ज्यादा पानी सहन नहीं कर पाएगा और नष्ट होने की संभावना ज्यादा रहेगी। इसके आसपास किसी भी प्रकार के खरपतवार को ना रहने दे। अप्रैल माह से लेकर जुलाई माह तक सदाबहार पौधे की अच्छे से सिंचाई करना बहुत ही आवश्यक होता है क्योंकि इस समय गर्मी की ऋतु में बहुत ज्यादा वाष्पीकरण होता है। ऐसे मे पौधों को ज्यादा पानी की आवश्यकता होती हैं। समय समय पर खाद और कीटनाशकों का छिड़काव करें ताकि पौधों मे किसी भी प्रकार का रोग या बीमारी ना लगने पाए।

3. **सदाबहार पौधे की कटाई छटाई इस प्रकार करें**:-

सदाबहार पौधा कम से कम 1 साल के समय के अंतराल में पूर्ण रूप से विकसित हो जाता है। सदाबहार पौधे के रोपाई के एक साल बाद आप तीन-तीन महीने के अंतराल में इसकी टहनियां पत्तियां और बीज और फलों को आप अलग-अलग तरीकों से एकत्रित करें। सबसे पहले आप इसके फलों को एकत्रित करें और अवांछित शाखाओं और टहनियों को हटा दें। फूलों से निकाले गए बीजों को आप गर्मी के मौसम में धूप में रख कर अच्छे से अंकुरित करना ना भूले।

बालसम:

बालसम यानि की पेरू जिसका आमतौर पर सबसे ज्यादा उपयोग बवासीर की समस्या से छुटकारा पाने के लिए किया जाता है। बालसम की खेती संपूर्ण भारत मे की जाती है और सबसे ज्यादा इन राज्यों में कर्नाटक, बंगाल , उतर प्रदेश , हरियाणा ,बिहार और पंजाब शामिल है। इसकी पैदावार इन राज्यों में सबसे ज्यादा होती है।यह कैंसर और यूरिन से संबंधित बीमारियों के लिए बहुत ही ज्यादा फायदे मंद है। साथ ही साथ बुखार , सर्दी , ठंडी और अन्य सर्द ऋतू की बीमारियों के लिए भी लाभदायक है। बलसम की खेती के लिए सबसे अच्छा समय गर्मियों का होता है। मई और जुलाई माह के अंदर अंदर बालसम के पौधों की बुवाई कर दी जाती है।बलसाम के पौधों के बीजों को संपूर्ण रूप से विकसित यानी की अंकुरित होने में 10-12 दिनों का समय लगता है।

1. **बाल सम के पौधे की बुवाई इस प्रकार करे**:-

बालसम के पौधे को उगाने के लिए सबसे पहले आप यह देख ले कि मिट्टी उपजाऊ हो और अच्छी हो। प्रत्येक बालसम के पौधे को उगाने के लिए उनके बीच में कम से कम 30 से 40 सेंटीमीटर का अंतराल अवश्य रखें। इनकी बुआ जी आप अपने हाथों द्वारा भी कर सकते हैं या फिर हल द्वारा या ट्रैक्टर के द्वारा बड़े पैमाने पर भी कर सकते हैं। बुवाई से पहले बीजों को अंकुरित करना ना भूलें इससे कम समय में बीज विकसित होना शुरू हो जाते हैं।

2. **बाल सम के पौधे की सिंचाई और उर्वरक व्यवस्था इस प्रकार करें**:-

बालसम के पौधों की शुरुआती दिनों मे सिंचाई करना इतना ज्यादा आवश्यक नहीं होता है। जब इनके फूल आना प्रारंभ हो जाता है उसके बाद आप सप्ताह मे तीन चार बार अच्छे से सिंचाई करें। इसकी सिंचाई करते समय आप साथ में कीटनाशक भी डाल सकते हैं ताकि पौधे को कीट से बचाया जा सके। इसकी सिंचाई आप ड्रिप् माध्यम के द्वारा कर सकते हैं इससे पौधे की जड़ों में पानी जाएगा और ज्यादा वाष्पीकरण भी नहीं होगा। बालसम के पौधे के फूल लगने में लगभग 30 से 40 दिनों का समय लगता है।ज्यादा वाष्पीकरण होता है। ऐसे मे पौधों को ज्यादा पानी की आवश्यकता होती हैं। समय समय पर खाद और की. टनाशकों का छिड़काव करें ताकि पौधों मे किसी भी प्रकार का रोग या बीमारी ना लगने पाए।

2. **बालसम के पौधों को कीट पतंगों और बीमारियों से इस प्रकार बचाएं**:-

सूरज की रोशनी सभी पौधों को पूर्ण रूप से विकसित होने में काफी लाभदायक होती हैं और ऐसे मे बाल सम के पौधों को भी उगने के लिए सूर्य की धूप की बहुत आवश्यकता होती है। जितने भी कीड़े मकोड़े जो कि फूलों के अंदर टहनियों में छुपे रहते हैं वेद धूप के कारण नष्ट हो जाते हैं। यदि पौधे में कमजोरी यहां पर पत्तियां और टहनियां मुरझाने लगती हैं तो ऐसे में आप समझ जाइए कि किसी भी प्रकार की बीमारी लग चुकी है। ऐसे में आप कीटनाशक और खा दुर्गा सप्ताह में दो-तीन बार छिड़काव अवश्य करें। ऐसा करने से सभी कीट पतंग और अन्य बीमारियां पौधे को विकसित होने से नहीं

गर्मियों के मौसम में हरी सब्जियों के पौधों की देखभाल कैसे करें

गर्मियों के मौसम में हरी सब्जियों के पौधों की देखभाल

आज हम बात करेंगे गर्मियों के मौसम में हरी सब्जियों की पैदावार कैसे करते हैं और उनकी देखभाल कैसे करनी चाहिए। ताकि गर्मी के प्रकोप से इन सब्जियों और पौधों को किसी भी प्रकार की हानि ना हो। यदि आप भी अपने पेड़ पौधों और हरी सब्जियों को इन गर्मी के मौसम से बचाना चाहते हैं तो हमारी इस पोस्ट के अंत तक जरूर बने रहे। जैसा कि हम सब जानते हैं गर्मियों का मौसम शुरू हो गया है। सब्जियों के देखभाल और उनको उगाने के लिए मार्च और फरवरी का महीना सबसे अच्छा होता है। बागवानी करने वाले इन महीनों में सब्जी उगाने का कार्य शुरू कर देते हैं। इस मौसम में जो सब्जियां उगती है। उनके बीजों को पौधों या किसी अन्य भूमि पर लगाना शुरू कर देते हैं। गर्मी के मौसम में आप हरी मिर्च, पेठा, लौकी, खीरा ,ककड़ी, भिंडी, तुरई, मक्का, टिंडा बैंगन, शिमला मिर्च, फलिया, लोबिया, बरबटी, सेम आदि सब्जियां उगा सकते हैं। यदि आप मार्च, फरवरी में बीज लगा देते हैं तो आपको अप्रैल के आखिरी तक सब्जियों की अच्छी पैदावार प्राप्त हो सकती है। गर्मियों के मौसम में ज्यादातर हरी सब्जियां और बेल वाली सब्जी उगाई जाती हैं। सब्जियों के साथ ही साथ अन्य फलियां, पुदीना धनिया पालक जैसी सब्जियां और साथ ही साथ खरबूज तरबूज जैसे फल भी उगाए जाते हैं।

गर्मियों के मौसम में हरी सब्जियों के पौधों की देखभाल और उगाने की विधि:

गर्मियों के मौसम में हरी सब्जी के पौधों की देखभाल करना बहुत ही आवश्यक होता है। ऐसा करने से पौधे सुरक्षित रहेंगे, उन्हें किसी प्रकार का कोई नुकसान नहीं होगा। यदि आप गर्मियों के मौसम में हरी सब्जियों को उगाना चाहते है, तो आप हरी सब्जी उगाने के लिए इन प्रक्रिया का इस्तेमाल कर सकते हैं यह प्रक्रिया कुछ निम्न प्रकार हैयसब्जियां ऐसी भी हैं जो मात्र 50 से 60 दिनों में तैयार हो जाती हैं।

मक्का

मक्का जो आजकल स्वीट कॉर्न के रूप में लोगों के बीच बहुत ही प्रचलित है।आप इसको घर पर भी लगा सकते हैं। मक्का उगाने के लिए आपको कुछ मक्के के दाने लेने हैं उन्हें रात भर पानी में भिगोकर रखना है और फिर उन्हें किसी प्रकार के साफ कपड़े से बांधकर रख देना है। आप को कम से कम 2 दिन के बाद जब उनके छोटे-छोटे अंकुरित आ जाए , तब उन्हें किसी क्यारी या मिट्टी की भूमि पर लगा देना है। मक्के का पौधा लगाने के लिए आपको अच्छी गहराई को नापना होगा। मिट्टी में आपको खाद ,नीम खली, रेत मिट्टी मिलानी होगी। खाद तैयार करने के बाद दूरी को बराबर रखते हुए, आपको बीज को मिट्टी में बोना होगा। मक्के के बीज केवल एक हफ्ते में ही अंकुरित होने लगते हैं।

मक्के के पौधे की देखभाल के लिए:

मक्के के पौधों की देखभाल के लिए पोलीनेशन बहुत अच्छा होना चाहिए। कंकड़ वाली हवाओं से पौधों की सुरक्षा करनी होगी। 2 महीने पूर्ण हो जाने के बाद मक्का आना शुरू हो जाते हैं। इन मक्के के पौधों को आप 70 से 75 दिनों के अंतराल में तोड़ सकते हैं।

टिंडे के पौधे की देखभाल:

टिंडे की देखभाल के लिए आपको इनको धूप में रखना होगा। टिंडे लगाने के लिए काफी गहरी भूमि की खुदाई की आवश्यकता होती है।इनकी बीज को आप सीधा भी बो सकते हैं।इनको कम से कम आप दो हफ्तों के भीतर गमले में भी लगा सकते हैं। टिंडे को आपको लगातार पानी देते रहना है। इनको प्रतिदिन धूप में रखना अनिवार्य है जब यह टिंडे अपना आकार 6 इंच लंबा कर ले , तो आपको इनमें खाद या पोषक तत्व को डालना होगा। कम से कम 70 दिनों के भीतर आप टिंडों को तोड़ सकते हैं

फ्रेंच बीन्स पौधे की देखभाल

फ्रेंच बीन्स पौधे की देखभाल के लिए अच्छी धूप तथा पर्याप्त मात्रा में पानी की आवश्यकता होती है। जिससे पौधों की अच्छी सिंचाई और उनकी उच्च कोटि से देखभाल हो सके।

भिंडी के पौधों की देखभाल

भिंडी के पौधों की देखभाल के लिए पौधों में नमी की बहुत ही आवश्यकता होती है। ऐसी स्थिति में आप को पर्याप्त मात्रा में पानी और धूप दोनों का उचित ध्यान रखना होगा। भिंडी के पौधों के लिए सामान्य प्रकार की खाद की आवश्यकता होती है। भिंडी के बीज को बराबर दूरी पर बोया जाता है भिंडी के अंकुर 1 हफ्तों के बीज अंकुरित हो जाते हैं। पौधों के लिए पोषक तत्वों की भी काफी आवश्यकता होती है। पानी के साथ पोषक तत्व का भी पूर्ण ख्याल रखना होता है। भिंडी के पौधे 6 इंच होने के बाद हल्की-हल्की मिट्टियों के पत्तो को हटाकर इनकी जड़ों में उपयुक्त खाद या गोबर की खाद को डालें। भिंडी के पौधों में आप तरल खाद का भी इस्तेमाल कर सकते हैं , ढाई महीने के बाद पौधों में भिंडी आना शुरू हो जाएंगे।

गर्मियों के मौसम में हरी मिर्च के पौधों की देखभाल

भारत में सबसे लोकप्रिय मसाला कहे जाने वाली मिर्च ,और सबसे तीखी मिर्च गर्मियों के मौसम में उगाई जाती है। बीमारियों के संपर्क से बचने के लिए तीखी हरी मिर्च बहुत ही अति संवेदनशील होती है। इन को बड़े ही आसानी से रोपण कर बोया या अन्य जगह पर उगाया जा सकता है। इन पौधों के बीच की दूरी लगभग 35 से 45 सेंटीमीटर होने चाहिए। और गहराई मिट्टी में कम से कम 1 से 2 इंच सेंटीमीटर की होनी चाहिए , इन दूरियों के आधार पर मिर्च के पौधों की बुवाई की जाती है। 6 से 8 दिन के भीतर इन बीजों में अंकुरण आना शुरू हो जाते हैं। हरी मिर्ची के पौधे 2ई3 हफ्तों में पूरी तरह से तैयार हो जाते हैं।

लौकी गर्मी की फसल है;

लौकी गर्मियों के मौसम में उगाई जाने वाली सब्जी है। लौकी एक बेल कहीं जाने वाले सब्जी है, लौकी में बहुत सारे पौष्टिक तत्व मौजूद होते हैं। लौकी को आप साल के 12 महीनों में खा सकते हैं।लौकी के बीज को आप मिट्टी में बिना किसी अन्य देखरेख के सीधा बो सकते हैं। गहराई प्राप्त कर लौकी के बीजों को आप 3 एक साथ बुवाई कर सकते हैं। यह बीज 6 से 8 दिन के भीतर अंकुरण हो जाते है। लौकी की फसल के लिए मिट्टियों का तापमान लगभग 20 और 25 सेल्सियस के उपरांत होना जरूरी है।

गोभी

गर्मियों के मौसम में गोभी बहुत ही फायदेमंद सब्जियों में से एक होती है।और इसकी देखरेख करना भी जरूरी होता हैं।गर्मियों के मौसम में गोभी की सब्जी आपके पाचन तंत्र में बेहद मददगार साबित होती है ,तथा इसमें मौजूद पोषक तत्व आप को कब्ज जैसी शिकायत से भी राहत पहुंचाते हैं। गोभी फाइबर वह पोषक तत्वों से पूर्ण रूप से भरपूर होते हैं।

पालक के पौधों की देखभाल

पालक की जड़ें बहुत छोटी होती है और इस वजह से यह बहुत ज्यादा जमीन के नीचे नहीं जा पाती हैं। इस कारण पालक की अच्छी पैदावार के लिए इसमें ज्यादा मात्रा की सिंचाई की आवश्यकता पड़ती है। पालक के पौधों की देखभाल करने के लिए किसानों को पालक के पौधों की मिट्टी को नम रखना चाहिए। ताकि पालक की उत्पादकता ज्यादा हो।

गर्मियों के मौसम में हरी सब्जियों के पौधों की देखभाल : करेले के पौधे की देखभाल

गर्मी के मौसम में करेले के पौधों को सिंचाई की बहुत ही आवश्यकता पड़ती है। इसीलिए इसकी सिंचाई का खास ख्याल रखना चाहिए। हालांकि सर्दी और बारिश के मौसम में इसे पानी या अन्य सिंचाई की ज्यादा आवश्यकता नहीं पड़ती है। गर्मी के मौसम में करेले के पौधों को 5 दिन के अंदर पानी देना शुरू कर देना चाहिए।
बीज रोपण करने के बाद करेले के पौधों को छायादार जगह पर रखना आवश्यक होगा, पानी का छिड़काव करते रहना है ,ताकि मिट्टी में नमी बनी रहे। 5 से 10 दिन के भीतर बीज उगना शुरू हो जाती हैं ,आपको करेले के पौधों को हल्की धूप में रखना चाहिए।

शिमला मिर्च के पौधों की देखभाल

शिमला मिर्च के पौधे की देखभाल के लिए उनको समय-समय पर विभिन्न प्रकार के कीट, फंगल या अन्य संक्रमण से बचाव के लिए उचित दवाओं का छिड़काव करते रहना चाहिए।
फसल बोने के बाद आप 40 से 50 दिनों के बाद शिमला मिर्ची की फसल की तोड़ाई कर सकते हैं। पौधों में समय-समय पर नियमित रूप से पानी डालते रहें। बीज के अंकुरित होने तक आप पौधों को ज्यादा धूप ना दिखाएं। शिमला मिर्च के पौधों की खेती भारत के विभिन्न विभिन्न हिस्सों में खूब की जाती है। क्योंकि यह बहुत ही फायदेमंद होता है साथ ही साथ लोग इसे बड़े चाव के साथ खाते हैं।

चौलाई के पौधों की देखभाल :

चौलाई की खेती गर्मियों के मौसम में की जाती है।शीतोष्ण और समशीतोष्ण दोनों तरह की जलवायु में चौलाई का उत्पादन होता है। चौलाई की खेती ठंडी के मौसम में नहीं की जाती ,क्योंकि चौलाई अच्छी तरह से नहीं उगती ठंडी के मौसम में। चौलाई लगभग 20 से 25 डिग्री के तापमान उगना शुरू हो जाती है और अंकुरित फूटना शुरू हो जाते हैं।

गर्मियों के मौसम में हरी सब्जियों के पौधों की देखभाल : सहजन का साग के पौधों की देखभाल

सहजन का साग बहुत ही फायदेमंद होता है इसके हर भाग का आप इस्तेमाल कर सकते हैं। और इसका इस्तेमाल करना उचित होता है।सहजन के पत्ते खाने के रूप में इस्तेमाल किए जाते हैं, तथा सहजन की जड़ों से विभिन्न विभिन्न प्रकार की औषधि बनती है। सहजन के पत्ते कटने के बाद भी इसमें प्रोटीन मौजूद होता है। सभी प्रकार के आवश्यक तत्व जैसे एंटीऑक्सीडेंट्स, खनिज, अमीनो एसिड,

टमाटर गर्मियों के मौसम में :

सब्जियों की पैदावार के साथ-साथ गर्मी के मौसम में टमाटर भी शामिल है।टमाटर खुले आसमान के नीचे धूप में अच्छी तरह से उगता है। टमाटर के पौधों के लिए 6 से 8 घंटे की धूप काफी होती है इसकी उत्पादकता के लिए। टमाटर की बीज को आप साल किसी भी महीने में बोया जा सकते हैं।डायरेक्ट मेथर्ड या फिर ट्रांसप्लांट मेथर्ड द्वारा भी टमाटर की फसल को उगाया जा सकता है। टमाटर की फसल को खासतौर की देखभाल की आवश्यकता होती है। टमाटर की बीजों को अंकुरित होने के लिए लगभग 18 से 27 सेल्सियस डिग्री की आवश्यकता होती है। 80 से 100 दिन के अंदर आपको अच्छी मात्रा में टमाटर की फसल की प्राप्ति होगी। टमाटर के पौधों की दूरी लगभग 45 से 60 सेंटीमीटर की होनी चाहिए।

गर्मियों की हरी सब्जियां आसानी से किचन गार्डन मे उगाएं : करेला, भिंडी, घीया, तोरी, टिंडा, लोबिया, ककडी

गर्मियों का मौसम हालांकि हर किसी को पसंद नहीं आता है लेकिन गर्मी के मौसम मे बनने वाली कुछ ऐसी सब्जियां हमें जरूर पसंद आती हैं। भारत के कई ऐसे इलाके हैं जहां पर गर्मियों के समय मे इन सभी सब्जियों की बड़े पैमाने पर खेती की जाती हैं और गर्मियों के मौसम मे इनकी बिक्री भी काफी तेजी पर होती है। गर्मियों की हरी सब्जियां हर जगह उपलब्ध भी नहीं हो पाती हैं। ऐसे मे हर समय गर्मी के मौसम मे बाजार से इन सब्जियों को लाने मे हम सभी को कई परेशानियां होती हैं। इन सभी परेशानियों का समाधान आप अपने घर के किचन के गार्डन के अंदर ही इन सभी सब्जियों को आसानी से लगा सकते हैं। तो आज हम आपको ऐसी ही कुछ अच्छी सब्जियों के बारे मे बताने वाले है, जिन्हें आप गर्मियों के समय मे अपने घर के गार्डन मे बड़ी ही आसानी से लगा सकते है । साथ ही साथ स्वादिष्ट ताजा सब्जी खाने का लुत्फ भी उठा सकते है । तो आईये जानते हैं गर्मियों की हरी सब्जियां जो आसानी से उगाई जा सकती हैं।

करेला :

करेले को तो आप सभी जानते ही होंगे लेकिन ,जितना यह कड़वा होता है अपने स्वाद मे उतना ही हमारे स्वास्थ्य के लिए लाभदायक भी होता है। गर्मियों के मौसम मे आप किचन के गार्डन मे करेले को बड़ी ही आसानी से उगा सकते है, इसे या तो आप बीज के द्वारा लगवा सकते है या फिर आप सीधे पौधे की रोपाई भी कर सकते है।

तो चलिए चलिए अब हम आपको बताते है, की आप किस प्रकार गर्मियों की हरी सब्जियां में प्रथम करेली की सब्जी को अपने गार्डन मे उगा सकते है : –
सबसे पहले आपको मिट्टी तैयार करनी होगी करेले को उगाने के लिए।
इसके लिए आप 50: मिट्टी 30: खाद और 20: रेत डाल दीजिए।
उसके बाद आप अपने हाथों से बीज की बुवाई कर सकते है या फिर सीधे पौधे की रोपाई।
करेले को उगाने के लिए सबसे अच्छा समय फरवरी से लेकर मार्च माह तक का होता है।
किचन के गार्डन मे करेले को लगाने के लिए आप एक बड़े आकार के गमले का इस्तेमाल करें क्योंकि यह बेलदार सब्जी है।
करेले को गर्मी का मौसम सबसे ज्यादा पसंद आता है ऐसे मे आप ज्यादा पानी की सिंचाई ना करे।
करेले को हमेशा कम पानी की आवश्यकता होती है,चाहे गर्मी का मौसम हो या सर्दी का आप केवल दो-तीन दिन में एक बार पानी जरूर सींचे।

गर्मियों की हरी सब्जियां : भिंडी

हर घर मे एक ऐसी सब्जी होती है, जो सबकी पसंदीदा होती है और वह है भिंडी। भिंडी हमारे शरीर को कई सारी बीमारियों से बचाती है और हमारे इम्यूनिटी सिस्टम को मजबूत बनाए रखती है। भिंडी को भी आप अपने किचन के गार्डन मे काफी आसानी से लगा सकते है, जिसके लिए आपको कुछ टिप्स को जानना जरूरी होगा। भिंडी मे बहुत सारे विटामिन और कार्बोहाइड्रेट भी पाए जाते है जो हमारे शरीर मे कोलेस्ट्रॉल और मधुमेह जैसी बीमारियों को कंट्रोल करने के काम आते हैं।
तो चलिए जानते है आप किस प्रकार भिंडी को अपने किचन के बाग बगीचे मे लगा सकते है :-
भिंडी को यदि आप गमले मे उगाना चाहते है तो इसके लिए आपको बड़ी साइज का गमला लेना होगा।
इसके बाद आप अच्छी क्वालिटी के भिंडी के बीजों को 3 इंच की गहराई तक गमले के अंदर बुवाई कर दें।
भिंडी के पौधे का बीज बोने के बाद आप गमले को ज्यादा देर तक कभी भी धूप मे ना रखें क्योंकि यह ज्यादा धूप सहन नहीं कर पाता है और पौधा मुरझा कर नष्ट हो जाता है।
जब भिंडी का पौधा थोड़ा बड़ा हो जाए तो नियमित रूप से इसकी सिंचाई करें और पानी की बिल्कुल भी कमी ना आने दे।
कीड़े मकोड़ों और अन्य बीमारियों से बचाने के लिए भिंडी के पौधों पर समय समय पर कीटनाशकों का छिड़काव अवश्य करें।
भिंडी के पौधों को खाद देने के लिए आप अपने घर के अच्छी क्वालिटी वाले खाद का ही इस्तेमाल करें।
बीजों को अच्छे से अंकुरित होने के लिए आप थोड़ी देर पानी मे जरूर भिगो दें ताकि पौधे को विकसित होने मे ज्यादा समय ना लगे।

घीया

लौकी जिसे कई जगहों पर गिया के नाम से भी जाना जाता है। लौकी की सब्जी खाने मे बहुत ही स्वादिष्ट होती है। इसलिए हर किसी की पसंद यही होती है कि वह ताजा और फ्रेश लौकी की सब्जी खाएं। ऐसे मे लौकी हमारे शरीर के लिए भी काफी फायदेमंद होती हैं। लौकी खाने से हमारा मस्तिष्क तनाव मुक्त रहता है और हृदय रोगी यानी कि मधुमेह रोगियों के लिए भी यह काफी लाभदायक साबित होती है। इसके अलावा लड़कियों में लौकी खाने से उनके बाल काले मोटे और घने होते हैं और सफेद बालों से भी छुटकारा मिल जाता।
तो चलिए आज हम आपको बताते है ,की आप किस प्रकार लौकी को अपने घर के गार्डन में किस प्रकार लगा सकते हैं:
इसके लिए सबसे पहले आप बड़े कंटेनर या गमले के अंदर मिट्टी का भराव कर लें और बीज को आधे इंच से ज्यादा गहराई मे ना लगाए।
आधे इंच की गहराई मे बीज को लगाने के बाद आप नियमित रूप से मिट्टी को पानी देते रहें और नमी बनाए रखें।
लौकी का बीज चार-पांच दिनों मे अंकुरित होने लगता है और इसके बाद पौधे मे विकसित होता है।
जब पौधा लग जाए तो उसके बाद आप यह जरूर ध्यान रखें कि लौकि को ज्यादा पानी ना डालें क्योंकि यह ज्यादा पानी के साथ सड़ने लगता है।
लौकी को उगाने के लिए सबसे अच्छा समय सितंबर से फरवरी के बीच मे होता है।
लौकी के पौधे को समय-समय पर अच्छी खाद और कीटनाशकों का अवश्य से छिड़काव करें।
पौधे की समय समय पर जरूर जांच कर देखें क्योंकि इन पर कीट पतंगे बहुत जल्दी लगने लग जाते हैं।

तोरई

भारत के कई इलाकों जैसे उत्तर प्रदेश और बिहार में तोरई की सब्जी बहुत ही चाव से बनाई और परोसी जाती है। तोरी की सब्जी बहुत ही ज्यादा स्वादिष्ट और लाभ. दायक भी होती हैं। इसके अंदर विटामिन ए, विटामिन सी, प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट और मिनरल फाइबर जैसे कई सारे फायदेमंद पोषक तत्व होते है। हालांकि तोरई की खेती पूरे देश मे होती हैं लेकिन इसे आप अपने घर के गार्डन बगीचे मे भी बड़ी ही आसानी से लगा सकते हैं।

तो चलिए जानते हैं कि, आप किस प्रकार तोरी की सब्जी को अपने घर मे लगा सकते हैं :-

इसके लिए आप सबसे पहले एक बड़ा गमला लेवे और उसके अंदर खाद ,उर्वरक और मिट्टी को अच्छे से डाल दें।

अब बीजों को आधे से 1 इंच के भीतर भीतर मिट्टी के अंदर इसकी बुवाई कर दें।

तोरई के पौधे को फलदार बनने में 40 से 45 दिनों का समय लगता है , ऐसे मे आप इसकी नियमित रूप से सिंचाई करना ना भूलें।

घर के बगीचे मे लगाने वाले पौधे जैसे तोरी के लिए आप कभी भी रासायनिक खाद उर्वरकों का इस्तेमाल ना करें।

कीटों और अन्य बीमारियों से बचाने के लिए सप्ताह मे दो तीन बार अच्छे से छिड़काव करें।

एक बार तोरई का पौधा बड़ा हो जाने के बाद आप इसे ज्यादा पानी ना देवे क्योंकि ज्यादा पानी के प्रति तोरई का पौधा काफी संवेदनशील माना जाता है।

तोरई को उगाने के लिए सबसे अच्छा समय फरवरी से मार्च माह के मध्य मे होता है।

गर्मियों की हरी सब्जियां : टिंडा

उत्तरी भारत के कई सारे इलाकों मे टिंडे गर्मियों की सबसे अच्छी सब्जी मानी जाती है ,और काफी स्वादिष्ट भी होती है। हम आपको बता देते है, कि टिंडे का मूल स्थान भारत ही है। भिंडी की सब्जी बनाने के लिए इसके कच्चे फलों का इस्तेमाल किया जाता है ना कि इसके पके हुए फलों का। टिंडे के पके हुए फलों मे बीज काफी बड़े और अंकुरित होते हैं ।लेकिन आप इसे अपने घर के बगीचे में बड़े ही आसानी से लगा सकते हैं और ताजा और फ्रेश सब्जी का लुफ्त उठा सकते हैं।

तो चलिए जानते तो चलिए जानते है, कि आप किस प्रकार टिंडे की सब्जी को लगा सकते हैं :-

टिंडे को लगाने के लिए सबसे अच्छी मिट्टी रेतीली दोमट मिट्टी मानी जाती है, जिसे आप अपने बड़े से गमले मे खाद के साथ तैयार कर लेवे।

इसके बाद बीजों को 2 इंच की गहराई तक अंदर बुवाई कर ले और चार-पांच दिन तक पानी की सिंचाई करते रहे।

टिंडे का पौधा 1 सप्ताह के भीतर दृ भीतर अंकुरित हो जाता है।

एक बार पौधा बड़ा हो जाने पर आप इसकी नियमित रूप से अच्छे से सिंचाई करना ना भूलें और इसी के साथ-साथ कीटनाशकों का छिड़काव जरूर करें।

टिंडे की बीमारियों से बचने के लिए आप खाद्य उर्वरक का इस्तेमाल जरूर करें और साथ ही साथ समय-समय पर इसकी जांच भी करें।

टिंडे की सब्जी को लगाने के लिए सबसे अच्छा समय मार्च से अप्रैल माह के बीच मे होता है।

गर्मियों की हरी सब्जियां : लोबिया

लोबिया की फली बहुत ही ज्यादा स्वादिष्ट होती है, जिसे भारत के कई इलाकों मे सब्जी के रूप मे भी बनाते है। भारत के कई राज्यों में लोबिया की खेती बड़े पैमाने पर होती है, लेकिन यदि आप अपने घर पर छोटी सी बागबानी करना चाहते हैं, तो आप बड़ी ही आसानी से लोबिया को अपने घर के गार्डन मे लगा सकते है। यह स्वादिष्ट होने के साथ-साथ हमारे शरीर के लिए काफी लाभदायक भी होती है। यह हमें कई प्रकार की हृदय संबंधी और जोड़ों मे दर्द होने जैसी परेशानियों से छुटकारा दिलाती है। इसकी सबसे अच्छी बात यह है कि इसे आप कहीं पर भी लगा सकते है अपने घर के आंगन मे छत मे।

तो चलिए जानते हैं, कि आप किस प्रकार लोबिया की सब्जी को अपने घर मे लगा सकते हैं :-

इसको लगाने के लिए सबसे पहले आप मिट्टी को अच्छी तरह से तैयार कर लीजिए खाद और उर्वरक के साथ।

अब इसके अंदर लोबिया के बीजों को लगा दीजिए और इसकी नियमित रूप से सिंचाई करते रहे।

जब लोबिया का पौधा विकसित हो जाए तो उसको प्रति सप्ताह दिन मे दो से तीन बार पानी जरूर डालें।

लोबिया मे कई सारी अलग-अलग बीमारियां होती हैं जो मौसम के परिवर्तन और कीट पतंगों के कारण लग जाती हैं।

इन बीमारियों और कीट पतंगों से बचने के लिए आप समय-समय पर कीटनाशक दवाइयों का छिड़काव अवश्य करें।

जब इसकी फलियां पूर्ण रूप से विकसित हो जाती हैं तो इसे आप अपने हाथों द्वारा तोड़ लें और उसके बाद आप इसकी सब्जी या फिर किसी भी प्रकार की औषधि रूप में भी इस्तेमाल कर सकते हैं।

सबसे अच्छा समय लोबिया को लगाने के लिए सितंबर से नवंबर माह के बीच का होता है।

गर्मियों की हरी सब्जियां : ककडी

दरअसल, ककड़ी की उत्पत्ति हमारे देश भारत से ही हुई है और यह तोरई के समान सब्जी बनाने के काम मे आती हैं। खासकर गर्मियों के समय मे ककड़ी का सेवन करना हमारे शरीर के लिए बहुत फायदेमंद होता है, क्योंकि यह हमारे शरीर में डिहाइड्रेशन की कमी को पूर्ण करती हैं। इसी के साथ साथ यह हमारे मस्तिष्क को तनावमुक्त रखती है, और कोलेस्ट्रॉल और उच्च रक्तचाप को भी सामान्य रखती है। ककड़ी की स्वादिष्ट सब्जी हर किसी की पसंदीदा होती है, ऐसे में हर कोई इसे अपने घर के अंदर बगीचे में लगाना जरूर पसंद करेगा।

तो चलिए जानते हैं, कि आप किस प्रकार ककड़ी की सब्जी को अपने बगीचे में लगा सकते हैं :-

ककड़ी को लगाने के लिए आप सबसे पहले एक बड़े आकार का गमला लें और उसमें ककड़ी के बीजों के अंकुरण के लिए अच्छी खाद और मिट्टी तैयार कर लेवे। मिट्टी तैयार हो जाने के बाद आप इसमें ककड़ी के बीज को लगा देवें और उसको चार-पांच दिनों तक नियमित रूप से थोड़ा-थोड़ा पानी देवे। ककड़ी के बीज को अंकुरित होने मे 1 सप्ताह का समय लगता है उसके बाद आप ककड़ी को नियमित रूप से पानी जरूर देवे। ककड़ी की बेल थोड़ी लंबी हो सकती हैं इसके लिए आप इसे किसी दीवार या फिर घर की छत पर भी लगा सकते हैं।

इसमें कई सारी बीमारियां और फलियों के सड़ने की परेशानी आ सकती हैं ऐसे मे आप इस पर समय-समय पर कीटनाशकों और उर्वरकों का छिड़काव करें। ककड़ी को जरूरत से ज्यादा पानी ना देवे क्योंकि यह कम पानी में भी अच्छे से विकसित हो जाती हैं।

पौधे के पूर्ण रूप से विकसित होने के बाद ककड़ी को 40 से 50 दिन का समय लगता है फलियों को तैयार करने मे।

अतः जैसा कि हमने आपको ऊपर इन सात सब्जियों के बारे मे बताया है जिन्हें आप गर्मियों के मौसम मे बड़ी ही आसानी से लगा सकते हैं। इन सब्जियों को लगाने के लिए आपको जितनी भी जानकारियां जाननी थी वह सभी हमने ऊपर बता दी हैं और इसके अलावा आप इसे अपने घर पर आसानी से लगा सकते हैं।

अरबी की बुवाई का मौसम : फरवरी-मार्च और जून-जुलाई, सम्पूर्ण जानकारी

दोस्तों आज हम बात करेंगे, अरबी(।तइप) की बुवाई साल में दो बार फरवरी मार्च, जून-जुलाई में की जाती है। इसके लिए आपको पर्याप्त मात्रा में जीवांश तथा रेतीली दोमट मिट्टी की आवश्यकता होती है। वह भी उच्च कोटि वाली जो सबसे अच्छी रहे। अरबी(।तइप) की बुवाई के लिए गहरी भूमि की आवश्यकता होती है। क्योंकि इसके कंदों का पूर्ण रूप से उच्च कोटि का विकास हो सके। अरबी (।तइप) की फसल की बुवाई के लिए आपको आठ से 10 क्विंटल बीज तथा हेक्टेयर की आवश्यकता होती है।

अरबी की खेती से किसानों को बहुत लाभ होता है। क्योंकि अरबी(।तइप) के कंद के साथ इसके पत्तों का भी बहुत ज्यादा उपयोग किया जाता है।इस दृष्टिकोण से अरबी की खेती किसानों के लिए बहुत लाभदायक है। ज्यादातर अरबी के कंद का प्रयोग सब्जियां बनाने तथा अचार आदि के रूप में भी किया जाता है। व्यापार की दृष्टि से देखें तो लोग अरबी के पकोड़े बनाकर अच्छा व्यापार करते हैं और आय का साधन बना रहता है।

अरबी की खेती के लिए मिट्टी एवं जलवायु

अरबी की फसल के लिए सबसे अच्छा मौसम गर्मी का होता है , गर्म एवं नम जलवायु अरबी की खेती के लिए बहुत ही उपयोगी होती।21 से 27 डिग्री का तापमान इसकी खेती के उत्पादन के लिए बहुत ही अच्छा होता है।अधिक गर्मी होने से अरबी की फसल की ज्यादा पैदावार होती है।किसान अरबी की खेती के लिए जिस मिट्टी का प्रयोग करते हैं वह बलुई दोमट मिट्टी होती है और यह मिट्टी इस फसल के लिए बहुत ही उपयोगी मानी जाती है।

अरबी खेत की तैयारी

अरब की खेती के लिए पहले खेतों को हल द्वारा अच्छी खुदाई की जरूरत होती है।एक नियमित रूप की गहराई प्राप्त करनी होती है।

किसी भी हल द्वारा खेतों की मिट्टी को पलटना आवश्यक होता है। मिट्टी को भुरभुरी बनाने के लिए तीन से चार बार हल्की जुताई करनी चाहिए। ताकि खेत की मिट्टियों में भुरभुरा पन आ जाए। क्यारियां की ऊंचाई कम से कम 10 सेंटीमीटर रखनी चाहिए जमीन की सतह से लेकर। इन क्यारियों की दूरी कम से कम 60 सेंटीमीटर रखनी चाहिए। इस प्रकार आप अरबी की खेती तैयार कर सकते हैं।

अरबी की फसल के लिए खाद एवं उर्वरक

किसान अरबी की फसल के लिए 40 से लेकर 60 क्विंटल सड़ी हुई गोबर की खाद का प्रयोग करते हैं। इस खाद का प्रयोग प्रति एकड़ खेत में किया जाता है। इन प्रति एकड़ों में किसान जमीन में कम से कम 16 किलोग्राम नाइट्रोजन का इस्तेमाल करते हैं तथा 25 किलोग्राम फॉस्फोरस का और 25 किलोग्राम पोटाश पूर्ण रूप से मिलाते हैं। खाद तैयार करने के लिए फसलों पर 16 किलोग्राम नाइट्रोजन का छिड़काव करते हैं।

अरबी की फसल की सिंचाई

अरबी की फसल की सिंचाई 7 से लेकर 10 दिन के अंदर करना शुरू कर देना चाहिए। रोपाई करने के बाद यह सिंचाई 5 महीने अंतराल पर लगातार करनी चाहिए। यदि किसी करण वर्षा नहीं हो रही है तो आपको यह सच्चाई 15 दिनों के भीतर करते रहना चाहिए। निराई दृ गुड़ाई करने के बाद खरपतवारों पर आसान तरीके से नियंत्रण पा लिया जाता है।

अरबी की फसल की कटाई एवं खुदाई

फसल की विभिन्न विभिन्न किस्में एवं प्रकार के अनुसार इन को तैयार होने में लगभग 150 से 225 दिनों का समय लग सकता है। वहीं दूसरी ओर आप 40 से 50 दिनों बाद पत्तियों को काट सकते हैं।अरबी की फसल की पत्तियां जब हल्की हल्की पीली होकर सूखने लगे और पत्तियों का आकार छोटा हो, तब इनकी खुदाई अच्छी तरह से कर लेनी चाहिए।

अरबी की फसल में लगने वाले रोगों से बचाव

अरबी की फसल में मुख्य रूप से कुछ रोग एवं कीट पैदा हो जाते हैं। रोगों और कीटों के लगने से अरबी की फसल की पत्तियां गलकर गिरना शुरू हो जाती है। फसल उपज में काफी बुरा असर पड़ता है।कीटो और रोगों से बचने के लिए और इनकी रोकथाम के लिए किसान 15 से 20 दिन के अंदर खेतों में डाईथेन एम-45 2.5 ग्राम प्रति लिटर तथा कार्बेन्डाजिम 12 प्रतिशत डब्ल्यू. पी. 2 ग्राम प्रति लिटर, मेन्कोजेब 63 प्रतिशत का मिक्सर बनाकर पानी में घोलकर फसलों पर छिड़काव करते हैं। इन क्रियाओं द्वारा अरबी की फसल पूर्ण रूप से कीटो और रोगों से सुरक्षित रहती है। किसी तरह के अन्य कीट और रोगों की कोई संभावना नहीं होती है। हम उम्मीद करते हैं कि हमारे इस आर्टिकल के जरिए ,आपको अरबी(।तइप) की बुवाई साल में दो बार फरवरी-मार्च तथा जून-जुलाई में की जाती है, यदि सभी प्रकार की जानकारियां प्राप्त कर आप संतुष्ट है, तो हमारी इस आर्टिकल को ज्यादा से ज्यादा शेयर करें।

मई माह के कृषि संबंधी आवश्यक कार्य

ग्रीष्मकालीन जुताई

रबी फसलों की कटाई के बाद अगर खेत खाली पड़े है तो यह सही समय है खेतों को सुधारने का ग्रीष्मकाल में खेतों की गहरी जुताई मिट्टी पलटने वाले हल से या बक्खर चला कर कर सकते है। गर्मी में जुताई करने से मिट्टी में छुपे हुए कीटों के अंडे, लार्वा इत्यादि बहार आ जाते है तथा रूप में अधिक तापमान के कारण मर जाते है। इसी प्रकार कई मृदाजनित रोगों के रोगाणु भी भूमि में दबे रहते है तथा फसलों को नुकसान पहुंचाते है। अगर गर्मी में गहरी जुताई करते है तो ये रोगाणु भी मर जाते है तथा फसलें रोगमुक्त पैदा होती है। कुछ बहुवर्षीय खरपतवारों से फसलों को बहुत नुकसान होता है तथा उनका नियंतरण भी मुश्किल होता है। गर्मी में गहरी जुताई करने से ऐसे खरपतवारों का नियंत्रण आसानी से किया जा सकता है। जो खत उबड़ खाबड़ है उनको कंप्यूटर चालित लेजर सम. तलक से समतल कर लेना चाहिए ताकि अगली फसलों में अंकुरण अच्छा हो, कृषि कार्य सुविधाजनक तरीके से सम्पादित हो तथा जल की बचत हो सके। अगर गोबर की खाद कम्पोस्ट आदि भी इसी माह मिट्टी में मिला दे जिससे उनका सही से अपघटन हो।

ग्रीष्मकालीन उडद एवं मूंग की देखरेख

इस माह ग्रीष्मकालीन उड़द / मूंग की बुवाई संपन्न हो जाती है देरी की बुवाई की स्थिति में महीने की शुरुआत तक भी कई जगह बुवाई करते हैं। उड़दमूंग की उपयुक्त बीजदर 15-20 कि. ग्रा./ हेक्टेयर होती है परन्तु देरी से बुवाई की स्थिति में 4-5 कि.ग्रा./ हैक्टेयर अधिक बीज का उपयोग करें। यदि पौधे घने हो तो बुवाई के 15-20 दिन बाद पाही निराई-गुड़ाई के समय कुछ पादप उखाड़ कर पौध संख्या सही कर दें। समय समय पर सिंचाई करते रहें। हो सके तो पूर्व फसलों के अवशेषों का आवरण पलवार के रूप में बिछा दें जिससे फसल में जल की बचल होती है तथा अधिक तापमान से होने वाले नुकसान से बचा जा सकता है।

खरीफ फसलों की बुवाई पूर्व तैयारी

महीने के अंत तक खरीफ फसलों की बुवाई पूर्व तैयारी शुरू कर ले ताकि समय पर बुवाई की जा सके। धान की नर्सरी जून की शुरुआत में डालना प्रारंभ हो जाता है अतः उसके लिए भी उन्नत बीज, खाद, खरपतवारनाशी, कीटनाशी आदि की खरीद करके रखें। खेत की तैयारी भी पहले से ही करके रखें। अरहर व कपास की बुवाई भी समय पर हो सके इसके लिए खेत की जुताई, उन्नत बीज की खरीददारी जैसी तैयारी समय रहते कर लें जिससे की बुवाई में देरी ना हो। जिन फसलो की मध्य जून तक बुवाई करनी हो उनमें गोबर की खाद, कम्पोस्ट आदि इसी माह खेत में डाल कर मिट्टी में मिला दें। जो खत उबड़ खाबड़ है उनको कंप्यूटर चालित लेजर समतलक से समतल कर लेना चाहिए ताकि अगली फसलों में जल की बचत हो सके।

सब्जियाँ

- कद्दूवर्गीय सब्जियों की बुवाई इस माह समाप्त कर लेनी चाहिए। इन सब्जियों की उन्नत किस्मों का चुनाव करें जो इस प्रकार हैं: खीरा पोइसेंट जापानीज लोंग ग्रीन, पूसा संयोग तथा पूसा उदय, लौकी पूसा नवीन, पूसा संदेश पूसा संतुष्टि पूसा समृधि, पी. एस. पी. एल. तथा पूसा हाइब्रिड-3य करेला पूसा दो मौसमी, पूसा विशेष पूसा हाइब्रिड-2 चिकनी तोरी- पूसा सुप्रिया, पूसा स्नेहा, पूसा चिकनीय धारीदार तोरी- पूसा नसदार सतपुतिया सा नूतन, को-1, चप्पन कद्दू आस्ट्रेलियन ग्रीन, पैटी पेन, अर्ली येलो, पूसा अलंकारण पेठा पूसा उज्जवलय खरबूजा पूसा मधुरस हरा मधु पंजाब सुनहरी, दुर्गापुरा मधु, लखनऊ सफेदा और पंजाब
संकर- 1. तरबूज सुगर बेबी, असाही यामातो, अर्का व ज्योति, आदि। उपरोक्त बेल वाली सब्जियों में खेत की तैयारी के समय 15-20 टन ह गोबर की खाद 50 कि.ग्रा. नाइट्रोजन, 50 कि.ग्रा. फास्फोरस तथा 50 कि.ग्रा. पोटाश प्रति हेक्टेयर की आवश्यकता होती है।

खेत में लगभग 45 से.मी. चौड़ी तथा 30-40 से.मी. गहरी नालियां बना लें। एक नाली से दूसरी नाली की दूरी फसल की बेल की बढ़वार के अनुसार 1.5 मी. से 50 मी. तक रखें। बुवाई से पहले नालियों में पानी लगा दें। जब नाली में नमी की मात्रा बीज बुवाई के लिए उपयुक्त हो जाए तो उनमें बीज बोएं। इन फसलों की बीज दर इस प्रकार है- खीरा 2.2-2.5 कि.ग्रा. लौकी 4-5 कि.ग्रा. करेला 6-7 कि.ग्रा. कद्दू 3-4 किग्रा, तारी 5-5.5 कि.ग्रा. चप्पन कद्दू 5-6 किग्रा. खरबूजा 15-20 कि.ग्रा. तरबूज 25-30 किग्रा. प्रति हैक्टेयर।

• भिंडी की अगेती बुवाई हेतु ए-4. परबनी क्रांति आदि किस्मों की बुवाई हेतु खेतों की तैयारी करें। बीज की मात्रा 20-25 कि.ग्रा. ध्हैक्टेयर रखें 2 ग्रा. कैप्टान अथवा थीरम से प्रति कि ग्रा. बीज को उपचारित करें।
• सब्जियों में चेपा के आक्रमण की निगरानी करते रहें। वर्तमान तापमान में यह कीट जल्द हो नष्ट हो जाते हैं। यदि कीट की संख्या अधिक हो तो इमिडाक्लोप्रिड / 025 मि.ली. प्रति लीटर पानी की दर से पके फलों की तुड़ाई के बाद छिड़काव आसमान साफ होने पर करें। सब्जियों की फसलों पर छिड़काव के बाद कम से कम एक सप्ताह तक तुडाई न करें। बीज वाली सब्जियों पर चेपा के आक्रमण का विशेष ध्यान रखें।
• प्याज की फसल में हल्की सिंचाई करें। फसल की इस अवस्था में उर्वरक न दें अन्यथा फसल की वनस्पति भाग की अधिक वृद्धि होगी और प्याज की गांठ की कम वृद्धि होगी।
• प्याज की फसल में चिप्स के आक्रमण की निरंतर निगरानी करते रहें। चिप्सकीट की संख्या अधिक पाए जाने पर कार्बारिल (2 ग्रा. /लीटर पानी) अथवा इमिडाक्लोप्रिड (1 मि.ली. / 4 लीटर पानी) किसी चिपकने वाले पदार्थ जैसे टीपोल आदि (1.0 ग्रा./लीटर घोल) में मिलाकर आसमान साफ होने छिड़काव पर करें।
• लहसुन में बैंगनी ब्लोच (धब्बा) रोग तथा चिप्स कीटों का आक्रमण हो सकता है। अतः खेत की निरंतर निगरानी करते रहना चाहिए। रोग तथा कीट के पाए जाने पर मेंकोजेब (2 ग्रा./ लीटर) तथा कानफीडोर (1 मि.ली./लीटर) किसी चिपकने वाले पदार्थ जैसे टीपोल आदि, (1 ग्रा. /लीटर घोल) में मिलाकर छिड़काव करें।
• टमाटर के फलों को फली छेदक कीट से बचाव के लिए किसान खेत में पक्षी बसेरा लगाए। कीट से नष्ट फलों को इकट्ठा कर जमीन में दबा देना चाहिए। साथ ही फल छेदक कीट की निगरानी के लिए फेरोमोन प्रपेश / 2-3 प्रपंश प्रति एकड़ की दर से लगाएं।
• बैंगन की फसल को प्ररोह एवं फल छेदक कीट से बचाव हेतु ग्रसित फलो तथा प्ररोहों को इकट्ठा कर नष्ट कर दें। यदि कीट की संख्या अधिक हो तो कीटनाशी स्पिनोसेड 48 ई.सी. / 1 मि.ली. ध् 4 लीटर पानी की दर से छिड़काव करें।
• लोबिया की उन्नतशील किस्मों जैसे पूसा कोमल अथवा पूसा फागुनी किस्मों की बुवाई करें।
• अगेती बोई गई बेलवाली सब्जियों में लाल मूंग कीट के आक्रमण की संभावना रहती है। यदि कीट की संख्या अधिक हो तो ड्राईक्लोरवॉस 76 ई.सी. (डी.डी.वी.पी.) (/1 ग्राम ध् लीटर पानी की दर से छिड़काव आसमान साफ होने पर करें।

उद्यान

• इस माह भी किसान भाई आम के बागों से मिलीबग कीटों के अंडों तथा नये प्रजन्मों को नष्ट करने के लिए जुताई कर सकते हैं। पेड़ के मुख्य तने पर लगभग 1 मीटर की ऊँचाई पर प्लास्टिक (1 फीट चौडा) का एक चद्दर तने के चारो ओर लगाएं तथा ग्रीस से सभी प्रकार के छिद्रों को बंद कर दें।

• मौसम को ध्यान में रखते हुए किसान भाईयों को सलाह कि ग्रीष्मऋतु के लिये गेंदे की तैयार पौध की रोपाई करे।
• मौसम को ध्यान में रखते हुए किसान भाईयों को अंगूर आड़ू व आलुबुखारा आदि फलवृक्षों में नमी की कमी होने पर सिचाई करें।
• जहां तक सम्भव हो इस माह किसी भी कीटनाशी का प्रयोग आम में न किया जाए परन्तु आम के भुनगे का अत्यधिक प्रकोप होने की स्थिति में मोनोक्रोटोफास अथवा डाइमेथोएट के 0.05ज घोल का एक छिड़काव कर सकते हैं। आम में खर्रा रोग का प्रकोप होने पर डिनोकेप (0.05 कवकनाशी का छिड़काव आवश्यक होता है। भुनगा कीट एवं खर्रा रोग की रोकथाम हेतु कीटनाशी एवं कवकनाशी को एक साथ मिलाकर भी छिड़काव कर सकते हैं।

घर पर मिट्टी के परीक्षण के चार आसान तरीके

किसान भाइयों आप यह तो जानते ही हैं कि मिट्टी अच्छी हो तो फसल अधिक हो सकती है। मिट्टी की कमियों को दूर करके फसल उगायी जायेगी तो अधिक फायदा होगा। सरकार ने मृदा परीक्षण के लिए सेंटर खोल दिये हैं, उसके लिये किसान भाइयों को अपने जरूरी काम छोड़ कर सरकारी सेंटरों तक आने-जाने की दौड़ भाग करनी होती है। यदि यही मृदा परीक्षण का काम घर पर आसान तरीकों से हो जाये तो फिर कहना ही क्या? आज हम आपके लिए वो चार आसान तरीके लेकर आये हैं, जिनसे आप घर बैठे अपनी मिट्टी यानी मृदा का परीक्षण कर सकते हैं।

प्रथम चरण

मृदा में पानी को सोखने की क्षमता, अम्लीय या खनिज तत्व की कमी या अधिकता की जानकारी मिल जाने से किसान भाई किसी प्रकार की अप्रिय स्थिति से बच सकते हैं। आम तौर पर तीन तरह की मिट्टी होती है। चिकनी मिट्टी, रेतीली मिट्टी या दोमट मिट्टी होती है।

1.**चिकनी मिट्टी** में पोषक तत्व अधिक होते हैं लेकिन इसमें पानी देर तक बना रहता है।

2.**रेतीली मिट्टी** में पानी जल्दी से निकल जाता है लेकिन इसमें खनिज तत्व कम होते हैं और क्षारीय होती है।

3.**दोमट मिट्टी** खेती के लिए सबसे अधिक उपजाऊ होती है। इसमें खनिज तत्व अधिक होते हैं और पानी जल्दी सूख जाता है लेकिन नमी काफी देर तक बनी रहती है।

इन मिट्टियों को कैसे पहचानें, पहले चरण में यह है कि आप अपनी मिट्टी गीली नहीं बल्कि नमी वाली मिट्टी हाथ में लें और उसे कसके निचोड़ने की कोशिश करें। जब आप हाथ खोलेंगे तो उसमें तीन तरह के परिणाम सामने आयेंगे उससे पहचान लेगें कि आपकी मिट्टी कौन सी है

1.**पहला परिणाम** होगा कि जैसे ही आप हाथ खोलेगें तो मिट्टी ढेला बना नजर आयेगा उसे हल्के से प्रहार करेंगे तो वह बिखर जायेगी लेकिन महीन नहीं होगी यानी छोटे-छोटे ढेले बने रहेंगे तो समझिये कि आपकी मिट्टी दोमट मिट्टी है जो खेती के लिए सबसे अधिक उपयोगी होती है।

2.**दूसरा परिणाम** यह होगा कि मिट्टी निचोड़ने के बाद हाथ खोलेंगे और मिट्टी के ढेले पर हल्का सा प्रहार करेंगे तो यह मिट्टी उस जगह से पिचक जायेगी यानी टूटेगी नहीं। ऐसी स्थिति किसान भाइयों को समझना चाहिये कि उनकी मिट्टी चिकनी मिट्टी है।

3.**तीसरा परिणाम** यह होगा कि हाथ खोलने के बाद जब मिट्टी के ढेले पर हल्का सा प्रहार करेंगे तो वह पूरी तरह से बिखर जायेगी यानी रेत बन जायेगी। इस तरह से आपकी मिट्टी का परीक्षण हो जायेगा।3.तीसरा परिणाम यह होगा कि हाथ खोलने के बाद जब मिट्टी के ढेले पर हल्का सा प्रहार करेंगे तो वह पूरी तरह से बिखर जायेगी यानी रेत बन जायेगी। इस तरह से आपकी मिट्टी का परीक्षण हो जायेगा।

दूसरा चरण

दूसरे चरण में आपको मिट्टी की जल निकासी की समस्या का परीक्षण करना बताया जा रहा है। खेती में जल निकासी का परीक्षण करना बहुत ही आवश्यक है। जलभराव से कई तरह के फसलों के पौधों की जड़ें सड़ जाती हैं और फसल नष्ट हो जाती है। मिट्टी की जलनिकासी का परीक्षण इस तरह से करे :-

जो किसान भाई इस तरह का परीक्षण अपने खेत का करना चाहते हों तो उन्हें वहां पर छह इंच लम्बा और छह इंच चौड़ा तथा एक फुट गहरा गड्ढा खोदना चहिये। इस गड्ढे में पानी भर दें, पहली बार इसका पानी अपने आप निकलने दें। जब एक बार गड्ढे का पानी निकल जाये तो उसमें दोबारा पानी भर दें। इसके बाद उस गड्ढे पर नजर रखें तथा पानी डालने का टाइम नोट करना चाहिये। फिर उसका पानी निकलने का समय नोट करें। यदि पानी निकलने में चार घंटे से अधिक समय लगता है तो आपको समझना चाहिये कि आपकी इस मिट्टी में जल निकासी की समस्या है। यानी जल निकासी की गति काफी धीमी है। इसके बाद उस मिट्टी का उपचार कराना चाहिये। उसके बाद ही कोई फसल बोने की योजना बनानी चाहिये।

तीसरा चरण

अब तीसरे चरण के रूप में हम मिट्टी की उर्वरा शक्ति यानी उसकी जैविक शक्ति का परीक्षण करेंगे। मिट्टी की जैविक शक्ति उसकी उर्वरा शक्ति का परिचय देती है। इसका परीक्षण करके आप मिट्टी की जैविक गतिविधियों की परख कर सकते हैं। इससे आपको मालूम हो सकता है कि आपकी मिट्टी कितनी उपजाऊ है। क्योंकि यदि आपकी मिट्टी में केंचुए हैं तो आपको यह समझना चाहिये कि आपकी मिट्टी में अन्य तरह के भी बैक्टीरिया व कीट भी हो सकते हैं। केंचुए और बैक्टीरिया तो आपकी खेती के लिए लाभकारी होते हैं और यह मिट्टी को स्वस्थ और उपजाऊ बनाने में मदद करते हैं लेकिन रोगाणु कीट आपकी फसल को नुकसान भी पहुंचा सकते हैं। उनका उपचार आपको पहले से ही करना होगा।

1.जैविक शक्ति का परीक्षण करने के लिए आप यह तय करें कि आपकी मिट्टी कम से कम 55 डिग्री तक गर्म हो गई है। उस स्थिति में मिट्टी में नमी है तब आप मिट्टी में एक फुट लम्बा और एक फुट चौड़ा तथा एक फुट गहरा गड्ढा खोदें। गड्ढे से निकली मिट्टी को किसी कार्ड बोर्ड पर रख लें।

2.इसके बाद आप इस मिट्टी को आप अपने हाथों से छानते हुए उसे गड्ढे में वापस डालने की कोशिश करें। इस प्रक्रिया को पूरा करते समय आप मिट्टी व गड्ढे पर पैनी नजर रखें। मिट्टी को छानते वक्त आपके हाथों में केंचुएं टकराते हैं तो आपको उनकी गिनती करते रहना चाहिये। इस दौरान आपको अपनी मिट्टी में यदि 10 केंचुए मिल जाते हैं तो आपको खुश हो जाना चाहिये क्योंकि इस तरह की मिट्टी बहुत उपजाऊ होती है और खेती के लिए बहुत अच्छी मानी जा सकती है।

चौथा चरण

किसान भाइयों मिट्टी की अम्ल और क्षार की परख करने के लिए हमें पीएच मान का परीक्षण करना होगा। मिट्टी के अम्ल या क्षारीय स्तर के आधार पर ही यह कहा जा सकता है कि आपकी मिट्टी कितनी उपजाऊ है और उसमें कौन-कौन सी फसल ली जा सकती है और कौन सी नहीं ली जा सकती है। कुछ फसलें कम उपजाऊ वाली मिट्टी में भी उगाई जा सकती है जबकि अधिकांश फसलों के लिए सामान्य पीएच मान वाली मिट्टी चाहिये। इसलिये मिट्टी का पीएच मान निकालना बहुत आवश्यक होता है। इसे दूसरे शब्दों में कहा जाये कि इस पीएच मान पर ही खेती का भाग्य टिका होता है। इसकी जांच के बिना खेती के बारे में फैसला नहीं किया जा सकता है।

किसान भाइयों आपकी मिट्टी के अम्लीय स्तर पर सारा कुछ निर्भर करता है कि आपके खेत में पौधे किस तरह से विकसित हो सकते हैं और कौन सी खेती की जा सकती है। पीएम मान का परीक्षण शून्य से लेकर 14 तक किया जा सकता है। इसमें पीएम मान्य शून्य बहुत अम्लीय होता है और 14 बहुत क्षारीय होता है।

ये अम्लीय और क्षारीय दोनों एक शब्द नहीं हैं और दोनों के अर्थ अलग-अलग हैं। हम जानते हैं कि अम्लीय और क्षारीय में क्या अंतर होता है।

1.**अम्लीय मिट्टी क्या होती है**

अम्लीय मिट्टी उसे माना जा सकता है जिसका पीएच मान शून्य से लेकर 5 या 6 तक होता है। इस मिट्टी में हाइड्रोक्साइड आयन की मात्रा कम हो ती है। यदि इस तरह के घोल के स्वाद की बात करें तो इसका स्वाद खट्टा होता है। पीएच का मान जितना कम होता है, उतनी ही वह मिट्टी अम्लीय अधिक होती है। इस तरह की मिट्टी में जैविक उर्वरा शक्ति नहीं होती है।

2.**क्षारीय मिट्टी क्या होती है**

क्षारीय मिट्टी वह होती है जिसका पीएच मान 8 से 14 तक होता है। इस तरह की मिट्टी में हाइड्रोक्साइड आयन की मात्रा ज्यादा होती है। यदि हम इस तरह के घोल की बात करें तो परीक्षण में इसका स्वाद कसैला होता है और इसका लिटमस टेस्ट में रंग नीला होता है। अधिक क्षारीय मिट्टी में फसल व मिट्टी को स्वस्थ बनाने वाले बैक्टीरिया नहीं होते हैं।

अच्छी खेती के लिए पीएम मान 6 से सात के बीच सबसे अच्छा माना जाता है। मिट्टी का पीएच मान 5 से कम या 8 से अधिक होता है। इस तरह की मिट्टी में फसल अच्छी नहीं हो सकती।

किसान भाइयों इसके लिए प्रत्येक उद्यान केन्द्र में पीएच परीक्षण किट आसानी से मिल जाती है। यह किट काफी अच्छे टेस्टिंग के परिणाम देतीं हैं। इससे आप अपनी मिट्टी के पीएच मान को आसानी से जांच परख सकते हैं। यदि आपकी मिट्टी का पीच मान 6 से 7 के बीच है तो आपको कोई समस्या नहीं है और इससे कम या अधिक होने पर आपको सहकारी सेवा केन्द्रों या जिला कृषि केन्द्रों से सम्पर्क करना होता। वो आपकी मिट्टी को परीक्षण के लिए लैब में भेजेंगे और जांच रिपोर्ट में आपको सारी बातें बताई जायेंगी। जो कमियां होंगी उनके उपचार के बारे में भी बताया जायेगा। इस तरह से आप अपनी मिट्टी का सुधार करके अपनी मनचाही फसल ले सकते हैं।

NEW HOLLAND
AGRICULTURE
3630 TX
Super Plus
49 HP
4WD
3630 NEW HOLLAND

ESCORTS
आपका चहेता फार्मट्रैक 60
अब 16.9 के बड़े टायर में
पेरा है बड़ा
FARMTRAC
60
POWERMAXX
प्रमाणित
55
HP बिना टर्बो
T20
FARMTRAC

POWER HOUSE
अब हर बूँद से मिले ज़्यादा ताकत